RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जून 2022

बाल विज्ञान पत्रिका, जून 2022

चकमक



मूल्य ₹50

मेघालया का खासी घटपर्णी!



रोहन चक्रवर्ती

अनुवाद: सजिता नायर

*पिचर प्लांट

अंक 429 • जून 2022
चकमक

इस बार

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

सम्पादन सहयोग
सजिता नायर

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

आवरण फोटो: लोकेश मालती प्रकाश

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

रोज़ा इफ्तार

सबा खान

चित्र: शुभश्री माथुर



रमज़ान में हर रोज़ इफ्तार के वक्त रोज़ा खोलने की खुशी रोज़दार से ज़्यादा बच्चों को होती है। क्योंकि हर दस्तरख्वान पर कुछ न कुछ इफ्तारी (खाने की अलग-अलग प्रकार की चीज़ें) ज़रूर होती हैं।

रोज़ा इफ्तार की सबसे अच्छी बात यह होती है कि इसमें कोई भी साथ में बैठकर खा सकता है। वह रोज़दार हो या न हो। कहते हैं, साथ में रोज़ा खोलना भी एक सबाब है। हालाँकि बचपन से इसकी एक कमी मुझे खलती रही। मस्जिदों और सड़क पर हो रहे रोज़ा इफ्तार में मर्दों की ही मजलिस (महफिल) होती। कम उम्र की बच्चियाँ तो फिर भी चली जातीं। लेकिन खुले तौर पर औरतों को मस्जिद के इफ्तार में जाने की इजाज़त न होती। कभी-कभार किसी मजबूरी में औरतें मस्जिद में रोज़ा खोल लें तो कोई मना भी नहीं करता। लेकिन शायद बचपन की परवरिश से ही बच्चियों को बिना कहे ये सिखा दिया जाता है कि बाहर मस्जिदों में उनकी जगह नहीं है।

पिछले कुछ वर्षों में बच्चों की तो रमज़ान भर ईद रहा करती थी। यदि घर में इफ्तारी न बनी हो तो भी हर गली में किसी न किसी के यहाँ रोज़ा इफ्तार होना तय होता था। बच्चे चाहे जिस रोज़ा इफ्तार में जाकर शामिल हो जाते। सड़कों पर दुकानदारों की सजाई हुई टेबल भी इफ्तारी से भरी होतीं।

यह रोज़ा इफ्तार मस्जिदों, चौराहों, शादी हॉल वगैरह में भी खूब होते हैं। मस्जिद की इफ्तारी में घर की बनी हुई कई चीज़ें भी शामिल होती हैं। क्यूँकि मस्जिद के आसपास रहने वाले लोग अपने घरों से इफ्तारी मस्जिद में पहुँचाते हैं। इससे मस्जिदों में लगने वाली दस्तरख्वानें इफ्तारी से भर जाती हैं। और मस्जिद में हर रोज़ रोज़ा इफ्तार पार्टी का माहौल बना रहता है।

इस बार रमज़ान शुरू होने के ठीक तीन रोज़ पहले मुझे पिछले साल के रमजान याद आ गए। वे रमज़ान जो लॉकडाउन के दौरान बीते...

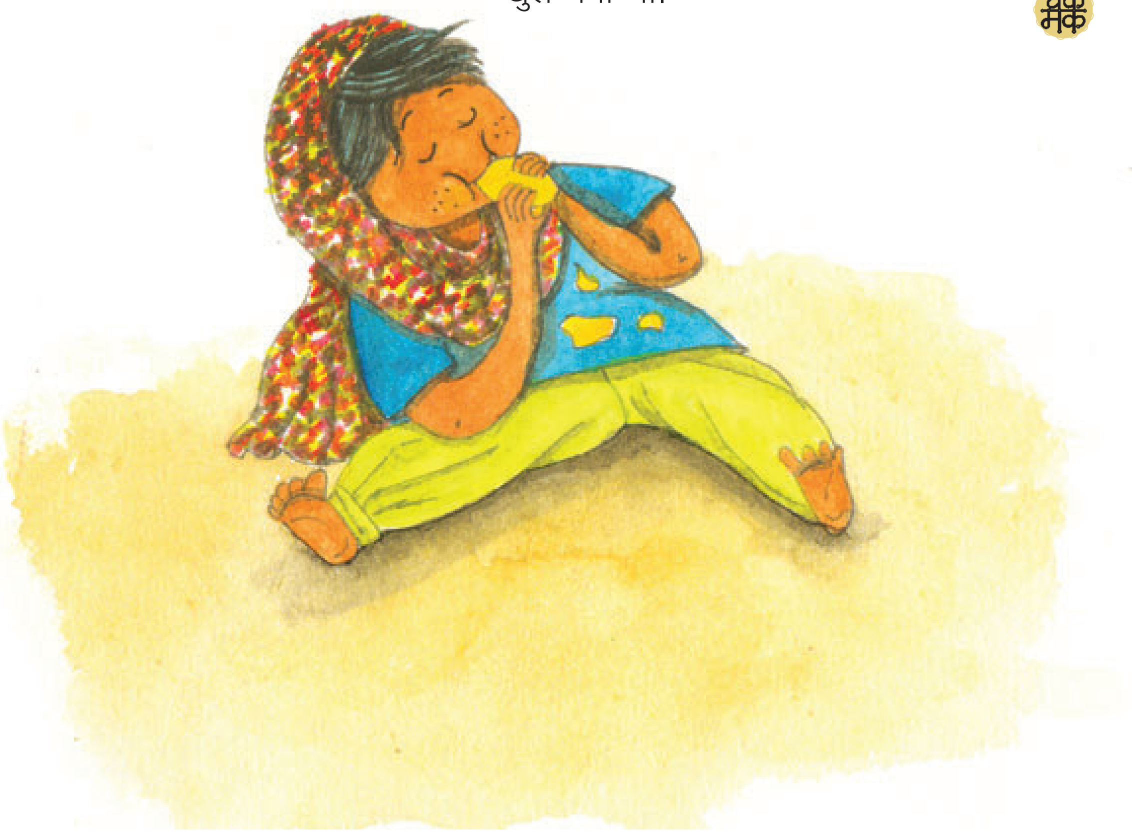
अयान और आशु दोनों भाई दस-बारह वर्ष की बीच की उम्र के हैं। अयान की माँ सिर्फ उनतीस वर्ष की उम्र में बेवा हो गईं। स्कूल के बाद ये दोनों भाई कबाब की दुकान पर ग्राहकों को पानी पिलाते और कबाब के साथ चटनी व सलाद की प्लेटें सजाकर देते। रमजानों में इनके लिए खास इनाम यह होता कि इन्हें इफ्तार के पहले शाम को जल्दी छुट्टी मिल जाती। बाकी बच्चों की तरह ये भी कभी मोहल्ले के इफ्तार में, तो कभी मस्जिद में सबसे आखिर तक इफ्तारी उड़ाते। क्यूँकि मगरिब की अज़ान होते ही सारे बड़े लोग नमाज़ के लिए उठ जाते थे। तोप चलने से मगरिब की अज़ान के बीच ज़्यादा से ज़्यादा पाँच मिनिट का फासला होता है। और इफ्तार में लम्बी-लम्बी दस्तरख्वानों पर बिछी इफ्तारी की मोटी-मोटी परतें जमा होती हैं जिसमें खजूर, केवड़े की खुशबू से लबरेज़ नुक्ती, अनारदाना, तमाम किस्म के फल, जूस, पापड़, खुर्मे और ना जाने कितने किस्म की खुशबूदार खाने की चीज़ों का अम्बार लगा होता है। इनको पाँच मिनिट में खाकर खत्म करना किसी बड़े इन्सान के भी बस की बात नहीं होती। बच्चों से लेकर बड़े तक सभी दस्तरख्वान पर



बिछी नेअमतों पर नज़र घुमाकर अपनी पसन्द की चीज़ों से रोज़ा खोल सकते हैं। नमाजियों के जाने के बाद नेअमतों का यह खज़ाना बच्चों का हो जाता है। इस खयाल से ही मन भर आ रहा था कि इस बार बच्चों का रोज़ा इफ्तार बन्द था।

अयान और आशु की तरह कई बच्चे इस इफ्तार पार्टी से महरूम (वंचित) थे। शाज़ और ज़ैनुल दोनों बच्चे घर के पास ही लगी देहलीज़ के घर में रहते हैं। मैंने देखा कि मगरिब की नमाज़ खतम होने के बाद भी दोनों बच्चे घर के अन्दर नहीं गए। वे दोनों बहन-भाई बाहर ही खेलते रहे। मैंने मन ही मन अन्दाज़ा लगाया कि शायद आज मेमूना (शाज़ और ज़ैनुल की अम्मी) के घर किसी का रोज़ा न होगा। इसलिए ही कोई इफ्तारी न बनाई होगी। अगले दिन ऐन वक्त पर पर्दा दुरुस्त करने के बहाने मैंने मेमूना के दरवाज़े में झाँका। आज बच्चे फिर बाहर थे। मैंने अपनी मँझली बेटी को भेज मेमूना के घर के हालात मालूम करके आने को कहा। पता चला कि आज वह सालन भी नहीं बनाई है। मेरा दिल भर आया। "रमज़ान को बरकतों का पाक, मुबारक महीना कहा जाता है। इसकी पाकीज़गी का मकसद मेरे मुताबिक यही ठहरा कि आसपास खाने-पीने की नेअमतों से कोई महरूम न रह जाए। लेकिन बहुत मामूली कमाई से गुज़ारा करनेवालों की गुज़र-बसर लॉकडाउन के चलते मुश्किल हो चली थी। लॉकडाउन में एक-दूसरे के यहाँ इफ्तारी देने-लेने से भी लोग कतरा रहे थे। कोई एक-दूसरे के यहाँ न इफ्तारी भेज रहा था, न तबर्रुक (प्रसाद)। जाने कैसा खौफ था बिमारी का या एहतियात बरत रहे थे सब बिमारी की वजह से।

लेकिन मुझे लगने लगा था यह दूरियाँ हमारे अन्दर की इन्सानियत को न खाने लग जाएँ। आज सहरी के बाद से ही घर की बच्चियों के साथ इफ्तारी बनाने की तैयारी शुरू करवा दी मैंने। दाल भिगोना, चने भिगोना, गुलगुले का आटा लगाना वगैरह। फिर तोप चलने के पहले-पहले तक इफ्तारी तैयार हो चुकी थी। शारीरिक दूरी और सावधानी का लिहाज़ करते हुए वक्त रहते घरों घर इफ्तारी पहुँचा दी गई। आज रोज़ा इफ्तार का मलाल कुछ कम था मुझे। बार-बार इस ख्याल से दिल भर आता था कि जैसे ही आयज़ा के घर इफ्तारी का पैकेट लेकर पहुँची, कैसे झट-से सानिया ने आम की काश लेकर चूसनी शुरू कर दी। हालाँकि इफ्तारी होने में अभी वक्त था, लेकिन मासूम सानिया का रोज़ा खुल गया था।



महिला गणितज्ञ

आलोका कान्हेरे
चित्र: मधुश्री



हायपेटिया

जन्म: 350-370, मृत्यु: 425 ईस्वीं
(लगभग 1662 साल पहले)



मिस्र के प्राचीन शहर एलेक्ज़ेंड्रिया में एक बड़ा-सा पुस्तकालय था। पर उसमें ना तो किताबें थीं और ना ही कागज़। तब लोग पपायरस (पेड़ की पत्तियों से बने कागज़) पर लिखते थे। इस पुस्तकालय में हायपेटिया नाम की एक गणितज्ञ काम करती थीं। उन्होंने ज्यामिति व अंकगणित में काफी सारा नया काम किया।



उन्होंने एस्ट्रोलैब नामक एक यंत्र के साथ भी काम किया। इस यंत्र की मदद से उन्होंने उस समय में सूर्य, चन्द्रमा और तारों की स्थिति की गणना की। वे अपने समय की अग्रणी गणितज्ञ और खगोलविद थीं। वास्तव में वे अकेली महिला हैं जिनके बारे में ऐसा दावा किया जा सकता है। वे एक लोकप्रिय शिक्षक थीं। उनके कई सारे विद्यार्थियों और श्रोताओं को उनके लैक्चर बहुत पसन्द आते थे। उनका किया गया कोई भी काम अब मौजूद नहीं है। क्योंकि पुस्तकालय में आग लगने की वजह से उनका सारा काम जल गया था। लेकिन उनके विद्यार्थियों के ज़रिए दुनिया को उनके काम के बारे में पता चलता रहा।



एडा लवलेस

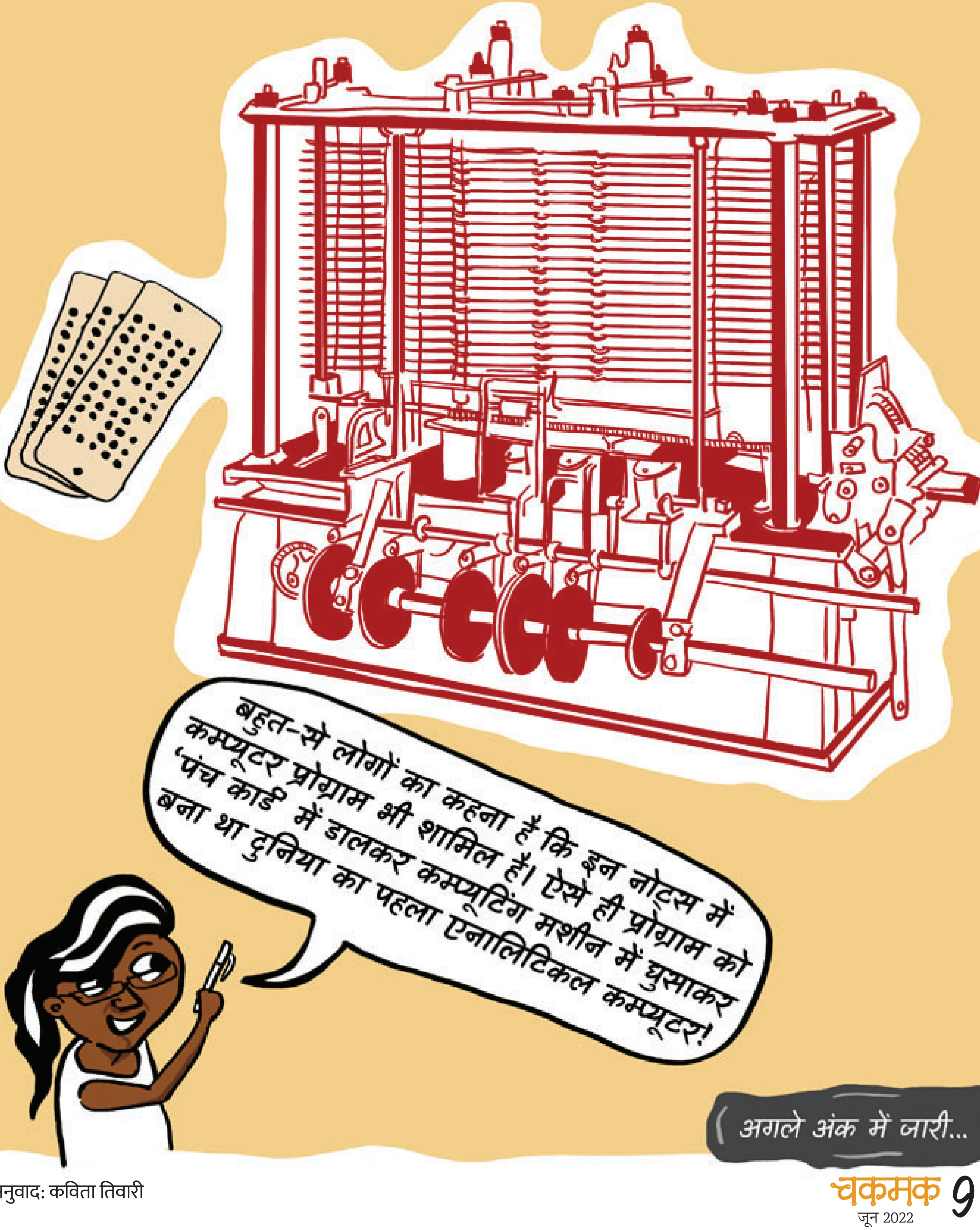
1815-1852

(207 साल पहले)



यदि किसी को पहला कम्प्यूटर प्रोग्राम बनाने का श्रेय दिया जा सकता है तो वह हैं एडा लवलेस। एडा लवलेस कम्प्यूटर का जनक कहे जाने वाले चार्ल्स बॉबेज के साथ मिलकर काम करती थीं। शुरुआती दिनों में कम्प्यूटर को एनालिटिक मशीन कहा जाता था। उस समय ज़्यादातर लोग यह नहीं जानते थे कि ये मशीनें वास्तव में कैसे काम करती हैं, पर एडा को इनसे लगाव था।

1842-43 में उन्होंने एनालिटिकल इंजिनों के बारे में एक लेख का अँग्रेज़ी से इतालवी में अनुवाद किया था। अनुवाद के साथ-साथ उन्होंने उस डॉक्यूमेंट को स्पष्ट करने के लिए अपने नोट्स भी लिखे थे। इन मशीनों के बारे में उनकी समझ इतनी ज़्यादा थी कि उनके नोट्स मूल लेख से तीन गुना लम्बे थे।



अगले अंक में जारी...

अनुवाद: कविता तिवारी

तुम भी जानो



पैंग्विन डाकघर को डाकिए की ज़रूरत

अन्टार्कटिका के पोर्ट लॉकरॉय द्वीप पर एक डाकघर है जो नवम्बर से मार्च तक खुला रहता है। इस डाकघर को एक डाकिए की ज़रूरत है। पर उसका काम सिर्फ चिट्ठियों को सँभालना और टिकट बेचना नहीं होगा। उसे पैंग्विनों को गिनने में शोधकर्ताओं की मदद करनी होगी। शोधकर्ताओं के साथ एक ही कमरे में रहना होगा और नल का पानी ना होने के कारण आते-जाते पर्यटकों के जहाज़ों पर नहाना होगा। वहाँ ना फोन होगा, ना इंटरनेट। क्या तुम यह काम करना चाहोगे?!



छुट्टियों में होमवर्क लेकिन बच्चों के लिए नहीं

हर साल टीचर छुट्टियों के लिए कोई न कोई होमवर्क तो देते ही हैं। लेकिन कुछ साल पहले तमिलनाडु के कोवई शहर के एक स्कूल की प्रिंसिपल ने बच्चों के घर एक अलग-सी चिट्ठी भेजी। इसमें गर्मी की छुट्टियों में मम्मी-पापा के करने के लिए कुछ सुझाव थे।

प्रिंसिपल की सत्रह बातों में से कुछ शायद तुम्हें पसन्द ना आएँ जैसे कि मीठा कम देना, टीवी-मोबाइल कम देखने देना...। लेकिन कुछ तो तुम्हें पक्के में पसन्द आएँगी मसलन बच्चों को बाहर खेलने दें, मिट्टी में गन्दा होने दें, उन्हें कोई कुत्ता, बिल्ली, मछली या तोता पालने दें, दादी-नानी या पड़ोसियों के घर, हाट जैसी सभी जगहों पर ले जाएँ। आपके साथ मिलकर वे खाना बनाएँ, त्योहार मनाएँ, गाने गाएँ, सब्ज़ियाँ-फल उगाएँ, रसोई में काम करें। और अन्त में यह कि आप शुक्रगुज़ार हों कि वे आपके बच्चे हैं।

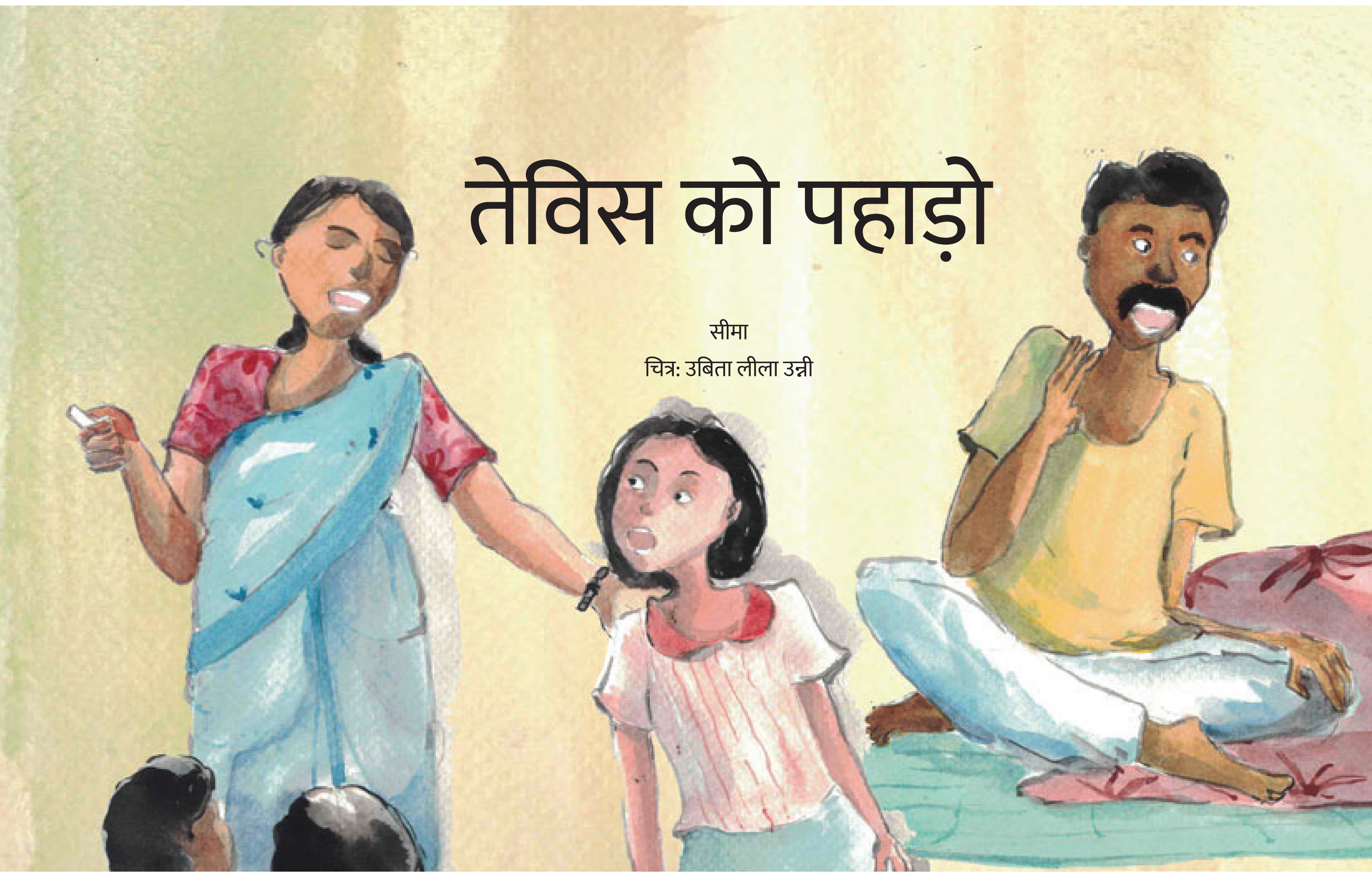


अन्तर ढूँढो!

इन दो चित्रों में दस से ज़्यादा अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?



सानिध्य, पाँचवीं, के के एकेडमी, लखनऊ, उत्तर प्रदेश



तेविस को पहाड़ो

सीमा

चित्र: उबिता लीला उन्नी

जो वाकया हमाये बचपन को है। तब हम तीसरी में पढ़त हते। स्कूल में हमाई होशियारी पे हमाई प्रिंसिपल को बड़ो नाज़ हतो। कायसे हमें बीस तक के पहाड़े मुँहजबानी याद हते। याद कैसे न होते पापा घर में सुबह-शाम पहाड़ा ही तो रटवात हते। चाहे जब पूछ लेते – सत्रह चौके, उन्नीस अट्ठे... और जवाब नहीं दे पाए तो कान खींचत हते। स्कूल में गणित में हमाए सबसे अच्छे नम्बर आत हते, जाके मारे हमरे क्लास के सबरे मोड़ी-मोड़ा हमसे जलत हते। हमरी गणित की मास्टरनी भी कम नहीं जलत हतीं। एक तो ऊको मोड़ा गणित में फिसड्डी हतो। सब बाये चिढ़ात हते कि अम्मा गणित की मास्टरनी और लाड़साब गणित में जीरो। दूसरे हम उनके झां ट्यूशन नहीं जात हते तो भी गणित में टॉप आत हते। जाके मारे बे हमसे और भुंझत रहत हतीं।

एक दिना का भओ। हमारी प्रिंसिपल ने चौथी क्लास की मोड़ी भेजकर हमें बुला भेजो। बा मोड़ी ने हमरी पूरी क्लास के सामने कई कि हमें प्रिंसिपल मैडम बुलवा रही हैं। जा सुनके तो हमरी सुट्टी-पुट्टी ही गुम हो गई। हम तो अपने आप को जलेबी घांई सीधे समझत हते, हमने का कर दओ जो प्रिंसिपल मैडम ने बुलावा भेजो है। हम बा मोड़ी के साथ चल दये। क्लास में जाते ही प्रिंसिपल मैडम ने हमें सब बच्चों के सामने खड़ो कर दओ और बोलीं कि जे है हमरे स्कूल की शान। अबे तीसरी में पढ़त है और पच्चीस तक के पहाड़े मुँहजबानी याद हैं।

जा सुनके तो हम फुलन्दी में आ गए। मन में सोची कि का भओ जो प्रिंसिपल मैडम ने बीस की बजाय पच्चीस कह दई। कोई हमाई परीक्षा थोड़ी न लेहें। पर तबहीं उनने सबरे मोड़ा-मोड़ी के सामने हमसे तेविस को पहाड़ा सुनाबे की कई। अब तो जैसे हमाई घिग्घी बँध गई। प्रिंसिपल मैडम बोलीं, “अरे! का भओ, शर्माओ नहीं। तुम तो बेधड़क होके सुनाओ।” जो पहाड़ा आत हतो तब ही तो सुनाते। पर तुरत के तुरत गुणा-भाग करके आधो सही और



आधो गलत तेविस को पहाड़ा हमने सुना दओ। प्रिंसिपल मैडम बहुत ही खुश हो गईं और उनने सबसे ताली भी बजवा दई।

हमने तो सोच लई थी कि आज तो हमें प्रिंसिपल मैडम के हाथों पिटाई को परसाद जरूरई मिलहे। पर जा का भई, पिटाई की जगह बढ़ाई। अपनी क्लास तक आत-आत हम जई सोच में पड़े रहे कि प्रिंसिपल मैडम कैसे नईं जान पाईं कि हमने तेविस को गलत पहाड़ा सुनाओ हतो? क्या जा वाकया पढ़वे वाले तुम होशियार जन जान पाए?



क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

तुम्हें क्या लगता है क्या भूत सच में होते हैं? अगर हाँ तो क्यों और अगर नहीं तो क्यों नहीं?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।



चित्र: अनीश रावत, चौथी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

मेरे हिसाब से भूत नहीं होते और भगवान भी नहीं होते। यह सब एक अन्धविश्वास है क्योंकि यह डराने के लिए है। इतिहास गवाह है क्योंकि अतीत में कहीं भी ढूँढो तो ना तो भूत और ना ही भगवान की कहीं पर बात है। भगवान को देखा है आपने। भगवान के नाम पर धन्धा है ये। अगर हर व्यक्ति 3 रुपए भी दे एक दिन का तो अपनी आबादी के हिसाब से एक दिन का तीन करोड़ रुपए कमाते हैं। इसलिए किसी की मदद करो पर तीन रुपए भी मत दो। हमारे बड़े लोग काम करवाने के लिए भूत की कहानी बताते हैं।

कृष्णा अधिकारी, आठवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, असगोली, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

भूत होते तो हमें नुकसान पहुँचाते। यह सब बच्चों को डराने की बातें हैं। सब नियम पर बने रहें तो ये बातें चलती रहती हैं।

हिमांशु, नौवीं, जीआईसी, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

हाँ, भूत होते हैं। यह घटना दो साल पुरानी है। जब मैं और मेरा दोस्त आम खाने गए थे। हम दोनों आम खाने लगे और तभी एकदम से बवंडर आया तो पके-पके आम नीचे गिर गए। हम दोनों ने सारे आम उठा लिए। फिर हम दोनों और आम तोड़ने लगे। और तभी एकदम से चूड़ी बजने लगी। और थोड़ी देर बाद चूड़ी बजना बन्द हो गई। फिर मैं और मेरा दोस्त आसपास देखने लगे तो वहाँ पर कोई और नहीं था। फिर वहाँ हम थोड़ी देर और रुके तो फिर एकदम से चूड़ी बजने लगी। और फिर हम दोनों वहाँ से भागते-भागते घर आ गए। और तभी से मैं यह कहता हूँ कि भूत होते हैं।

हरवंश अहिरवार, शासकीय माध्यमिक शाला जेरवारा, सागर, राहतगढ़, मध्य प्रदेश

अगले अंक के लिए सवाल है—

मान लो कि दो जगहों का तापमान एक समान है। तो ऐसे में जिस जगह पर उमस ज़्यादा हो वहाँ पर लोगों को ज़्यादा गर्मी क्यों लगती है?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

हमारे गाँव में एक बच्ची माई रहती है। वह किसी से भी नहीं डरती है। उससे हमारे गाँव के सारे भूत से डरते हैं। वह बच्चों को कहानी सुनाती है। पीपल के पेड़ को पकड़कर हिला देती है। रात में कितने भी बजे, बारह, एक बजे भी कहीं भी चली जाती है। उसे डर नहीं लगता है बल्कि उसके डर के मारे हमारे गाँव में कोई भूत नहीं आता है।

निखिल, छह साल, तितली समूह, दिगन्तर स्कूल, जयपुर, राजस्थान

मुझे लगता है कि भूत सच में होते हैं क्योंकि यह सोचने से मेरी रचनात्मकता बढ़ती है। भूत के बारे में मुझे बहुत कुछ पता है। मुझे लगता है कि भूत हमेशा बुरे नहीं होते और वे हर मिनट किसी को मारना नहीं चाहते। कभी-कभी जब खिड़कियाँ खड़खड़ाती हैं घर में और दिन तेज़ गर्मी के हों, तो मुझे नहीं लगता कि हर बार ये काम हवा ही करती होगी। मुझे भूतों से डर नहीं लगता और ऐसा लगता है कि भूत हमारे घर में सिर्फ इसलिए महसूस किए जाते हैं क्योंकि वे हमारे बीते हुए रिश्तेदार होते हैं जो हमारे पास वापस आते हैं।

ईशान चटर्जी, नौवीं, प्रमीथियस स्कूल, नोएडा

भूत कभी नहीं होते हैं। यह तो मन का वहम है। अक्सर हमें तो भूत क्या भूत की परछाई भी नहीं दिखी। बस दादी लोग कहती थीं कि हमारे समय में तो भूत होते थे। वही लोग चर्चा करते हैं। हमारे मन में भूतों वाली बातें बस जाती हैं और हम डर जाते हैं। लेकिन हमने कोई भूत नहीं देखा है। बस हमने लोगों के मुँह से भूतों वाली बातें सुनी हैं।

राज अहिरवार, छठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश



चित्र: विजय लक्ष्मी, पाँचवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तराखण्ड

बोलते हैं कि दुष्ट आत्मा धरती में ही रह जाती है। पर ऐसा कभी नहीं होता। क्योंकि नर्क किसलिए बना है? हमें बचपन से ये सारी बातें बताई जाती हैं कि रात के बारह बजे मत निकलना, नींबू-मिर्ची को मत खूँदना, गाँव में सब अफवाह फैलाते हैं कि हमने भूत देखा। ये सब फेक है! मैं नहीं मानती भूत होता है। अगर आप मेरे सामने कोई चुड़ैल को लाकर खड़ा कर देंगे तो ही मैं मानूँगी कि भूत होते हैं।

शायमा परवीन, सातवीं, पंचम दीवान शासकीय कन्या शाला पूर्व माध्यमिक, भाटापरा, छत्तीसगढ़

टैक्नोलॉजी के युग में भूतों पर भरोसा! नहीं। कभी नहीं। ये सिर्फ किस्सों में हैं।

आयुष, दसवीं, जीआईसी, केवर्स, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

चलो मान लिया कि भूत होते हैं। तो इस बात का क्या सबूत है। अक्सर लोग कहते हैं कि जब भूत आसपास होते हैं तो आग का रंग नीला हो जाता है। परन्तु ऐसा नहीं है। एलपीजी गैस से जलने वाली आग का रंग भी नीला होता है तो क्या एलपीजी गैस में भूत है। असल में तो भूत नहीं होते हैं। भूत तो मरने के बाद बनते हैं। तो जो मर जाएगा वो बताएगा कैसे और जो ज़िन्दा है वो भूत को देखेगा कैसे। भूत सिर्फ किस्से-कहानियों में होते हैं।

कनिष्का सोनवे, दसवीं, एजुकेशन हब, देवास, मध्य प्रदेश

भूत वगैरह कुछ नहीं होते। फिल्म में जो भूत होता है वह तो किसी आदमी का मेकअप करके या कैमरे की मदद से डरावना करके दिखाया जाता है। असल में भूत जैसी कोई चीज नहीं होती। लेकिन शायद आत्मा होती है। जब किसी भले आदमी को धोखे से मार देते हैं तो उसकी आत्मा बन जाती है और वह उस मारने वाले आदमी से बदला लेने के लिए दूसरे आदमी में आ जाती है और उसका पता बता देती है। लेकिन केवल भले इन्सान की ही आत्मा ऐसा कर सकती हैं। बुरे इन्सान की आत्मा ऐसा नहीं कर सकती। आत्मा हमें दिखती नहीं है। उसकी अपनी कोई ताकत भी नहीं होती।

तमन्ना, महल समूह, दिगन्तर स्कूल, जयपुर, राजस्थान



चित्र: कृतिका चढ़ार, आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

पिपरिया में बहुत पुराना मकान है। पास के झाड़ पर भूत है। यह बात सब जगह पहुँची। सयानों ने बैगा को बुलाया पर लड़कों ने नाराज़गी जताई। लड़कों ने भूत का राज जानना चाहा। उन्होंने समारू को पुराने मकान में भूत बनते देखा। लड़कों को सारी बात समझ आ गई। समारू दारू का धन्धा करता है। समारू नहीं चाहता कि लोग पुराने मकान के सामने से गुज़रें। लड़कों ने सबके सामने समारू का राज़ खोल दिया। सब बोले यह रहा भय का भूत।

हिमांशी कुमारी यादव, दूसरी, शासकीय प्राथमिक शाला, पौंसरी, बलौदा बाज़ार, छत्तीसगढ़

मुझे एक दिन सपना आया कि अमावस्या की रात को एक खुँखार जगह में एक भूतिया घर था। वह घर बहुत पुराना था। वहाँ दो सिरकटे भूत रहते थे। मैं सपने में वहाँ तक पहुँच गया। मैं भूतों से डरने लगा तभी दोनों भूत शिकार करने निकल रहे थे और उन्हें मैं मिल गया। मैं घबरा गया और भागने लगा। मुझे एक भूत ने पकड़ लिया और बोलने लगा कि तुमने ही हम दोनों के सिर काटे हैं। और मैं भागते-भागते घर पहुँच गया। मेरी नींद थोड़ी देर के लिए खुली और वापस लग गई। मैं फिर से उसी भूतिया घर में पहुँच गया। सुबह हो गई। दोनों सिरकटे भूत सो रहे थे। मैंने उन्हें बेहोश कर दिया। और उन्हें छुपा दिया। मुझे डर लग रहा था कि किसी को पता ना चल जाए कि मैंने इनको मारा है। एक दादाजी ने उन्हें देख लिया और मुझे भी वहीं देख लिया। वो मुझ पर शक करने लगे कि तुमने इन भूतों को मारा है। मैं डर गया और मेरी नींद खुल गई। मैं इन बातों को नहीं मानता। भूत नहीं होते। भूत तो इन्सान का वहम होते हैं। जैसे कि मुझे हो गया था।

हरिओम चढ़ार, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

जब मरने वाले आदमी को जलाने ले जाते हैं तो मिर्ची और नमक और पैसे गिराते हैं। जो कोई उन्हें उठाकर ले जाता है उस पे भूत लग जाता है। फिर उसको पुजारी के पास ले जाना पड़ता है। फिर पुजारी उस भूत को भगाते हैं। पर मुझे लगता है कि यह सब इन्सान का वहम है।

विवेक, राजकीय इंटर कॉलेज, असगोली, द्वाराहाट, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड

मुझे लगता है कि इस दुनिया में भूत नहीं है। क्योंकि बिलकुल शान्त माहौल में व्यक्ति घबरा जाता है। इस कारण डर जाता है जैसे उसे बार-बार कोई पुकार रहा हो। और उसका वहम ही उसे डराता है कि कोई मुझे छू रहा है। और जैसे ज़ोर-ज़ोर से हवा चलने लगती है तो बस इन्हीं सब कारणों से लोगबाग कहते हैं कि भूत होता है। पर असल में वह भूत नहीं हमारा वहम होता है।

आकांक्षा जाटव, दसवीं, बगरोदा रीडिंग रूम, एकलव्य फाउंडेशन, भोपाल, मध्य प्रदेश

भूत नहीं होते। ये तो बस हमारी सोच पर निर्भर करता है कि हम क्या सोचते हैं। हमें अगर लगता है कि भूत हैं तो वो न होकर भी हैं और अगर नहीं तो घर पर अकेले रहने में भी कोई डर नहीं।

सुशील साहू, ग्यारहवीं, शिवलाल मेहता हायर सैकेण्डरी स्कूल, भाटापरा, छत्तीसगढ़

चित्र: हरिओम चढ़ार, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला, जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश



बढ़ई और चमत्कारी गुफा

विश्वनाथ, मणिकंडन
चित्र: मधुश्री

गणित है मज़ेदार





वो पहाड़ी दिख रही है? उसकी तलहटी में एक चमत्कारी गुफा है जो लोगों के पैसों को दुगुना कर सकती है। बस अपना पर्स उस गुफा के अन्दर रख दो और फिर आँखें बन्द करके सौ तक गिनो। आँखें खोलोगे तो तुम्हारे पर्स का पैसा दुगुना हो जाएगा।
क्या आप मुझे वो चमत्कारी गुफा दिखाएँगे?
तुम मुझे कुछ पैसे दोगे तो मैं खुद तुम्हें उसे गुफा तक ले जाऊँगा।
दोनों मोल-भाव करने लगे।
इस बीच बूढ़े व्यक्ति ने बड़ी सावधानी से यह मालूम कर लिया कि बढ़ई के पास कुल कितने रुपए थे।
काफी बहस के बाद तय हुआ कि रुपए दुगुने होने पर हर बार बढ़ई उन्हें 200 रुपए देगा।
बूढ़े व्यक्ति ने गुफा की ओर चलना शुरू किया और बढ़ई यह सोचते हुए कि उस शाम वो कितना पैसा घर ले जाएगा उनके पीछे हो लिया। जब वो गुफा पर पहुँचे तो उसने बूढ़े व्यक्ति को अपना पर्स दे दिया।


अब अपनी आँखें बन्द करो। मैं यूँ गया और यूँ आया...
1...2...3...4...
बढ़ई की सौ तक गिनती पूरी हुई नहीं कि बूढ़ा व्यक्ति पर्स लेकर बाहर आ गया। और...
...गज़ब हो गया! रकम दुगुनी हो गई! चलो अपनी तयशुदा फीस ले लो और वापिस पर्स लेकर इस चमत्कार को दोहराओ! जल्दी जाओ!
फीस लेके वापिस अन्दर, वापिस दुगनी...
फीस लेके वापिस अन्दर, वापिस दुगनी, लेकिन इस बार...
...गज़ब हो गया! तीसरी बार वही चमत्कार! चलो फीस ले लो, और... अरे ये क्या! फीस देने के बाद कुछ बचा ही नहीं! ऐसा कैसे हो सकता है?
वाकई ऐसा कैसे हो सकता है? ज़रा सोचो तो:
कहानी की शुरुआत में बूढ़े व्यक्ति से मिलने से पहले बढ़ई के पर्स में कितने पैसे रहे होंगे?
अपने जवाब हमें ज़रूर भेजना।

संकेत

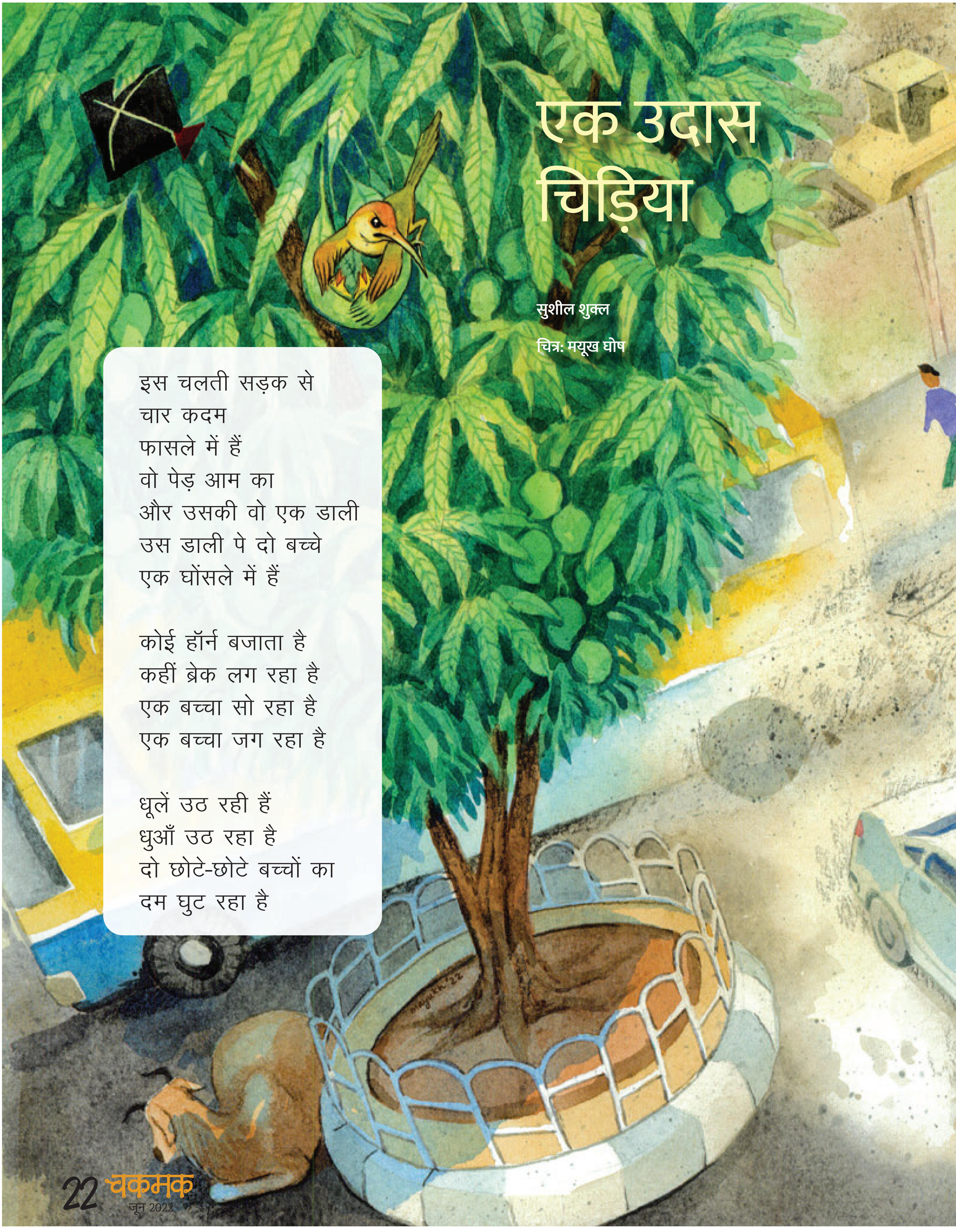


और पहेलियाँ

मान लो कि कहानी में बूढ़ा व्यक्ति इस चमत्कार को तीन बार नहीं, पाँच बार दोहराता है। और पाँचवीं बार बूढ़े व्यक्ति को उसकी फीस देने के बाद बढ़ई के पास कोई रकम नहीं बचती। तो इस स्थिति में कहानी की शुरुआत में बढ़ई के पास कितनी रकम होनी चाहिए?

3 बार या 5 बार को छोड़ो, तुम अपनी खुद की पहेली बना सकते हो। 1 से 10 के बीच की अपनी कोई भी पसन्दीदा संख्या चुन लो। अब मान लो कि बूढ़े व्यक्ति ने चमत्कार को उतनी बार दोहराया था और अन्त में बढ़ई के पास कोई रकम नहीं बची थी। क्या अब तुम इस पहेली को हल कर सकते हो?

अनुवाद: कविता तिवारी



एक उदास चिड़िया

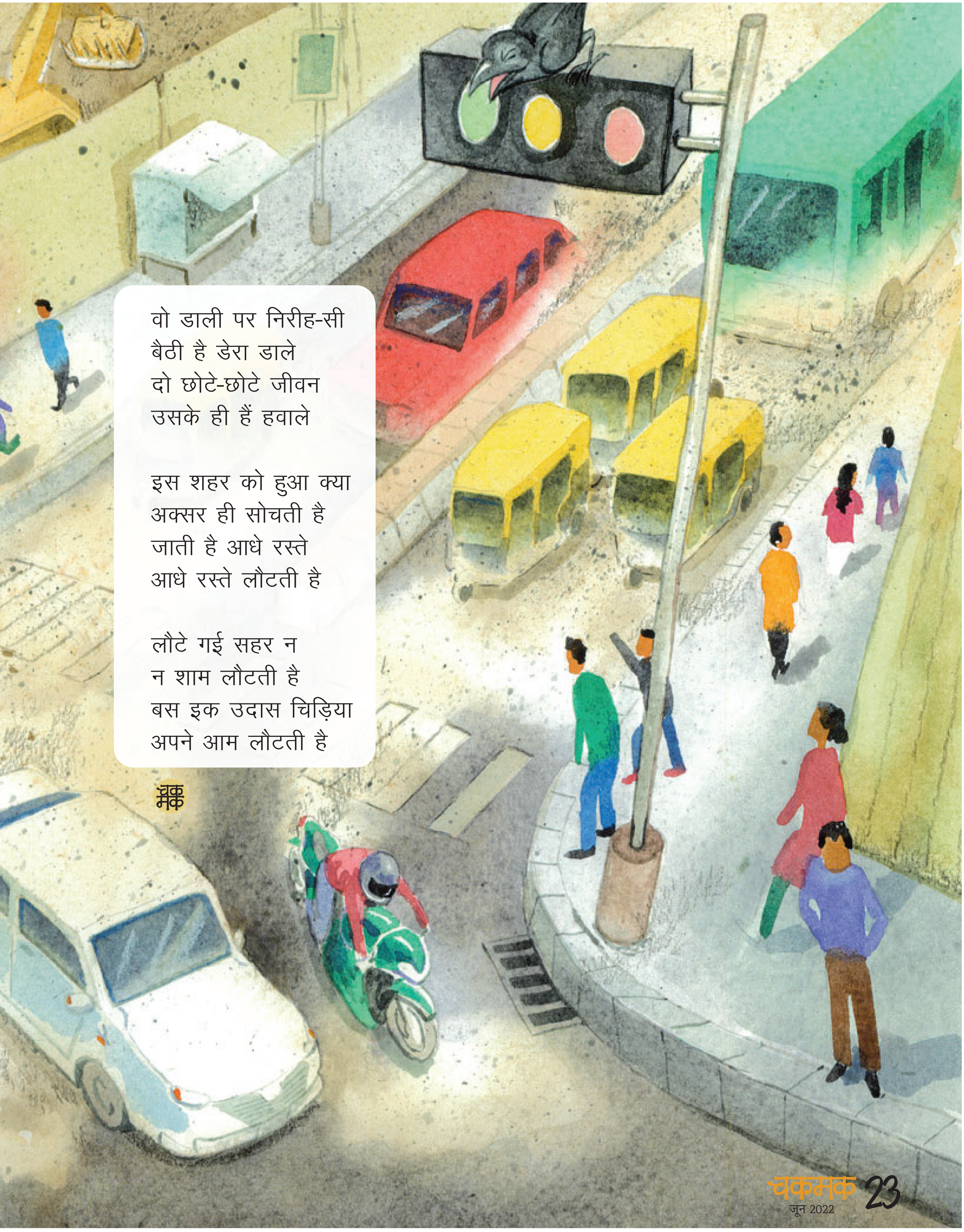
सुशील शुक्ल

चित्र: मयूख घोष

इस चलती सड़क से
चार कदम
फासले में हैं
वो पेड़ आम का
और उसकी वो एक डाली
उस डाली पे दो बच्चे
एक घोंसले में हैं

कोई हॉर्न बजाता है
कहीं ब्रेक लग रहा है
एक बच्चा सो रहा है
एक बच्चा जग रहा है

धूलें उठ रही हैं
धुआँ उठ रहा है
दो छोटे-छोटे बच्चों का
दम घुट रहा है



वो डाली पर निरीह-सी
बैठी है डेरा डाले
दो छोटे-छोटे जीवन
उसके ही हैं हवाले

इस शहर को हुआ क्या
अक्सर ही सोचती है
जाती है आधे रस्ते
आधे रस्ते लौटती है

लौटे गई सहर न
न शाम लौटती है
बस इक उदास चिड़िया
अपने आम लौटती है

आकाश में बहती गंगा

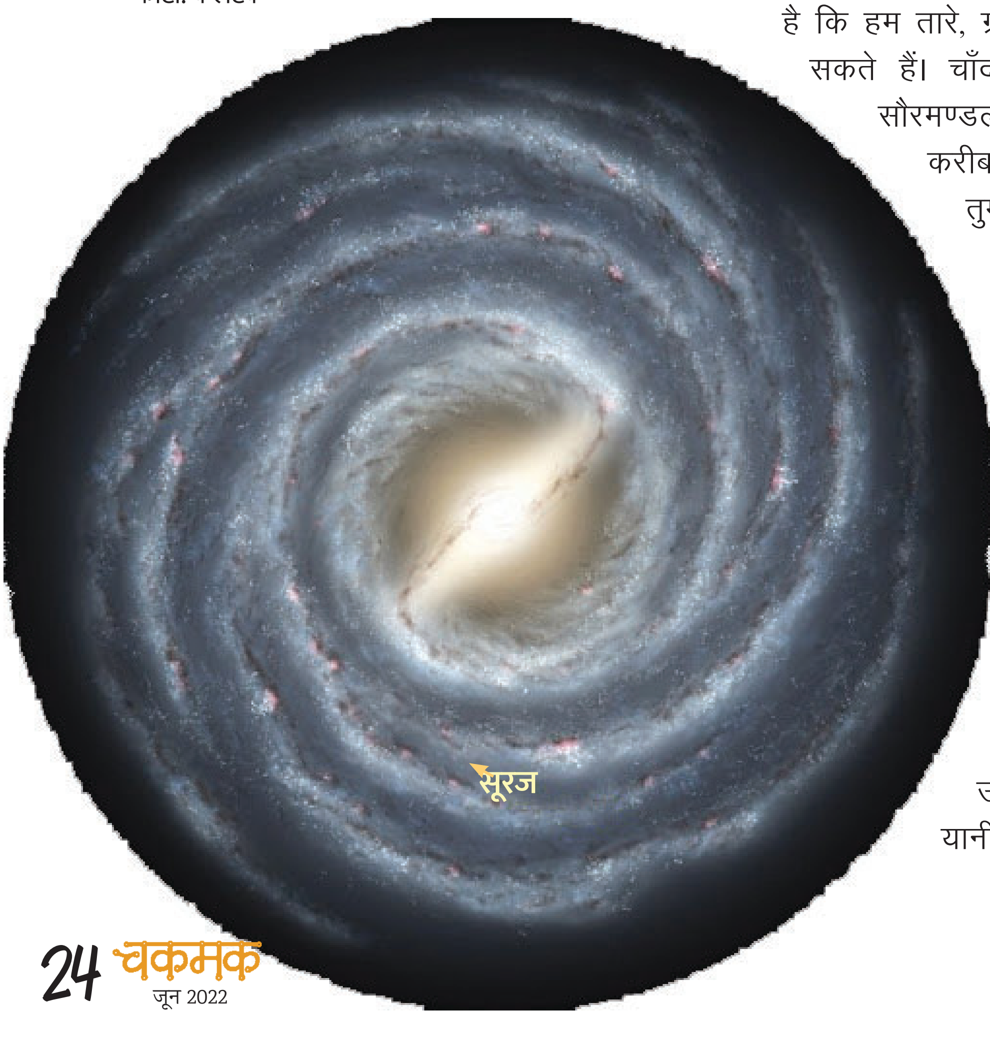
आलोक मांडवगणे फोटो: आलोक मांडवगणे अनुवाद: विनता विश्वनाथन

क्या तुमने 'मिल्की वे' का नाम सुना है? ये कोई दूध से बना रास्ता नहीं है, बल्कि आसमान में एक धब्बा है। इसे देखोगे तो लगेगा कि किसी ने वहाँ दूध गिरा दिया है। लेकिन ये मिल्की वे असल में है क्या...?

तारों का एक समूह

मिल्की वे अनगिनत तारों का एक समूह है। हम इन तारों से बहुत दूर हैं। इस कारण ये हमें एक-दूसरे के इतने करीब दिखते हैं – दूध की किसी पट्टी जैसे। ये पट्टी हमारी आकाशगंगा (galaxy) के बीच का हिस्सा है। हमारी आकाशगंगा का नाम ही मिल्की वे गैलेक्सी है। सौरमण्डल और उसके ग्रह, धूमकेतु, क्षुद्रग्रह, छोटे-बड़े तारे सब गुरुत्वाकर्षण बल के कारण एक समूह जैसे दिखते हैं। इसी तरह गुरुत्वाकर्षण बल के कारण किसी आकाशगंगा में अरबों तारे, गैस, धूलकण सब एक-दूसरे से जैसे बँधे रहते हैं। आकाशगंगा कई आकृतियों की होती है, जैसे कि अण्डाकार, गोल, घुमावदार इत्यादि।

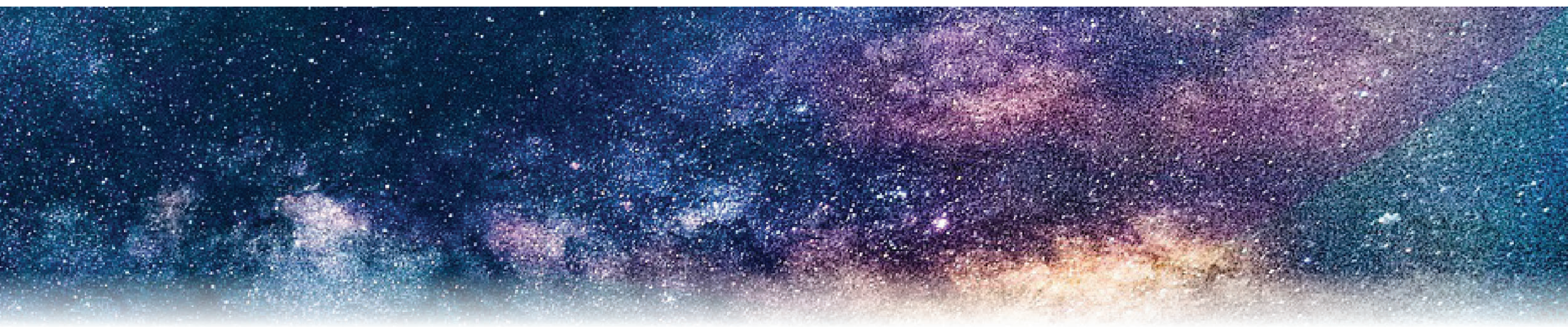
चित्र - मिल्की वे आकाशगंगा में हम कहाँ हैं —
फोटो: कैलटेक



आसमान में दिखती आकाशगंगाएँ

आसमान में हम क्या देख सकते हैं? हमें पता है कि हम तारे, ग्रह, सूरज और अपना चाँद देख सकते हैं। चाँद, सूरज और सारे ग्रह हमारे सौरमण्डल का हिस्सा हैं और हमारे बहुत करीब हैं। लेकिन बाकी सारे तारे जो तुम्हें दिखते हैं वो हमारी आकाशगंगा का हिस्सा हैं। हमारी आकाशगंगा में अरबों तारे हैं।

क्या तुम्हें पता है कि पूरी कायनात में अरबों-खरबों आकाशगंगाएँ हैं और हमारी उनमें से सिर्फ एक है। अपने पड़ोस की कुछ आकाशगंगा हम अपनी आँखों से देख सकते हैं, जैसे कि एन्ड्रोमिडा आकाशगंगा। अपनी आकाशगंगा को हम उसके अन्दर से ही देख सकते हैं। यानी कि आसमान में जो ज़्यादातर



चीज़ें हम देखते हैं वो सब हमारी मिल्की वे आकाशगंगा का ही हिस्सा हैं।

हमारी आकाशगंगा के सदस्य

मिल्की वे आकाशगंगा जलेबीनुमा घुमावदार है। इसकी कई बाँहें हैं और बीच में बहुत सारे तारे केन्द्रित हैं। ऐसा गुरुत्वाकर्षण बल के कारण है। सूरज के साथ-साथ बाकी सारे तारे और पृथ्वी व ग्रह इस केन्द्र के चक्कर लगाते हैं। बिलकुल वैसे ही जैसे पृथ्वी सूरज के चक्कर लगाती है। कई दशकों से खगोलज्ञों का अनुमान रहा है कि मिल्की वे आकाशगंगा के इस चमकीले केन्द्र के बिलकुल बीच में एक ब्लैक होल है। इसकी पहली तस्वीर हाल ही में खींची गई है जिसे तुम पेज 43 पर देख सकते हो। ब्लैक होल क्या होते हैं इसके बारे में हम कभी और बात करेंगे।

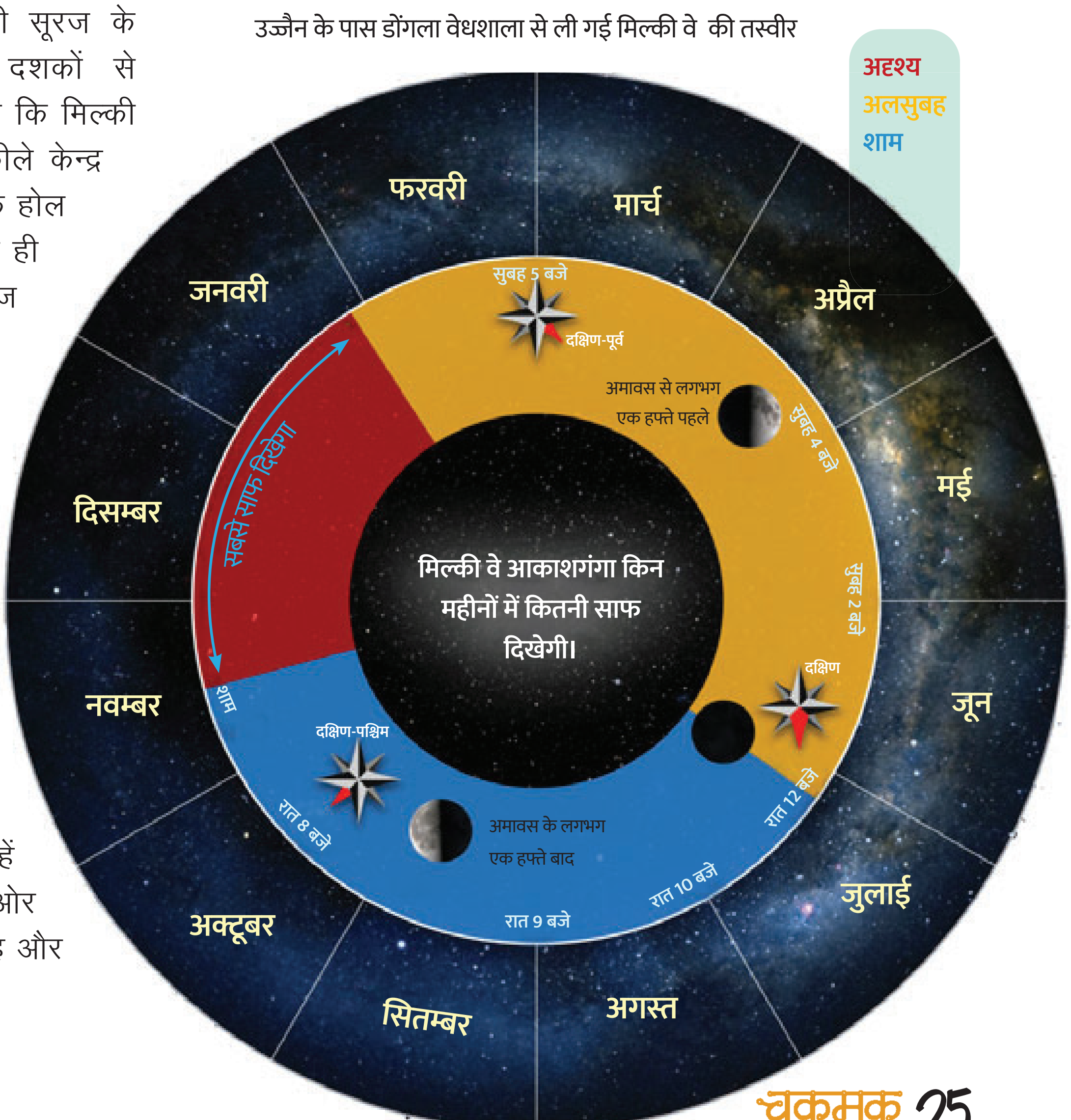
कब देख सकते हैं मिल्की वे

यह केन्द्रीय भाग ही है जो हमारी आकाशगंगा का सबसे ज़्यादा घना और सबसे ज़्यादा चमकीला हिस्सा है। ये चमकीला भाग तुम्हें आसमान में दक्षिण की ओर दिखेगा। गर्मियों में सुबह-सुबह और ठण्ड के आने तक उससे और जल्दी दिखता जाएगा। तो इस महीने मिल्की वे आकाशगंगा को देखने के सबसे अच्छे दिन हैं अमावस और बारिश से पहले की काली रातें। पर हाँ, इसके लिए तुम्हें शहर और उसकी रौशनी या किसी भी तरह के प्रकाश प्रदूषण से दूर जाना होगा। क्या पता इसे देखकर तुम भी हमारी तरह मंत्रमुग्ध रह जाओ...

आलोक मांडवगणे भोपाल के आर्यभट्ट फाउंडेशन में कार्यरत हैं।

चित्र - मिल्की वे आकाशगंगा किन महीनों में कितनी साफ दिखेगी।

उज्जैन के पास डोंगला वेधशाला से ली गई मिल्की वे की तस्वीर





आखिरी किश्त

नन्हा राजकुमार

एन्त्वॉन द सैंतेक्ज़ूपेरी

अनुवाद : लालबहादुर वर्मा

अब तक तुमने पढ़ा...
लेखक को बचपन में बड़ों ने चित्र बनाने से हतोत्साहित किया तो वह पायलट बन बैठा। अपनी एक यात्रा के दौरान उसे रेगिस्तान में जहाज़ उतारना पड़ा। वहाँ उसकी भेंट एक नन्हे राजकुमार से हुई, जो किसी दूसरे ग्रह का निवासी है। राजकुमार ने लेखक को अपने ग्रह के बारे में बहुत-सी विचित्र बातें बताईं। आकाश से विचरते हुए उसने कुछ अलग-अलग ग्रहों में जाने के बारे में सोचा। यात्रा के सातवें दौर में वह पृथ्वी पर पहुँचा। रेगिस्तान, पहाड़ और बर्फीले मैदानों में भटकते-भटकते उसने एक बगीचे में अपने फूल जैसे हज़ारों फूलों को देखा यह देखकर वह उदास हो गया। फिर लेखक और राजकुमार पानी की तलाश में एक कुएँ तक पहुँचते हैं। अब आगे...

"इस धरती के इन्सान," राजकुमार बोला, "एक बगीचे में हज़ारों गुलाब लगते हैं... और फिर उन्हें वह नहीं मिलता है जिसकी उन्हें तलाश है...।"

"वे उसे ढूँढ नहीं पाते..." मैंने प्रतिध्वनि की।

"जबकि जिसकी उन्हें तलाश है वह एक फूल, थोड़े-से पानी में ही मिल सकता था..."

"निश्चित ही," मैंने कहा।

राजकुमार ने बात पूरी की, "आँखें अन्धी होती हैं। हमें दिल से खोजना चाहिए।"

मैंने भी पानी पी लिया था। साँस ठीक-से चलने लगी थी।

सूर्योदय के समय रेत का रंग शहद जैसा हो जाता है। मैं इस रंग के कारण भी खुश था। आखिर दुखी क्यों होऊँ मैं...!

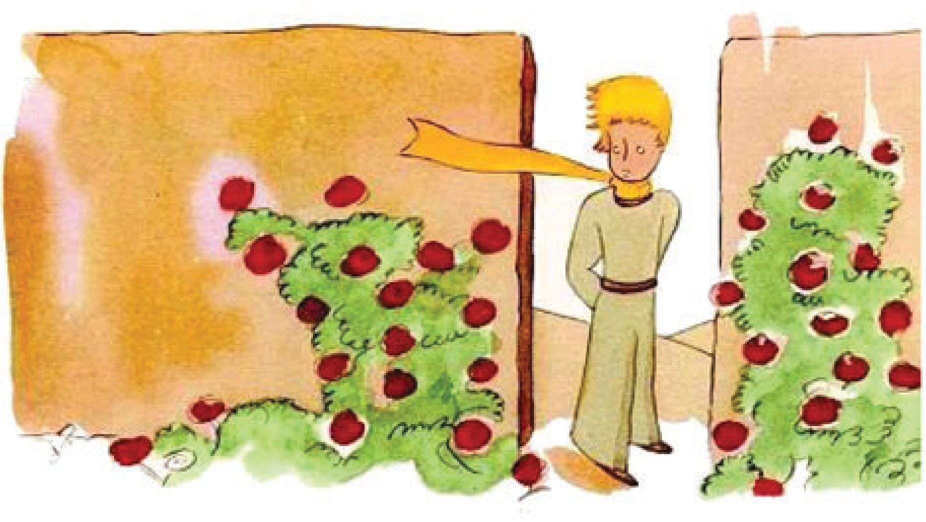
"तुझे अपना वादा पूरा करना चाहिए," मेरे पास आकर बैठता हुआ वो बोला।

"कौन-सा वादा?"

"वही 'जाबा', भेड़ का मुँह बन्द करने के लिए... फूल की ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर है।"

मैंने जेब से रेखाचित्रों की कॉपी निकाली। चित्रों को देखकर वो हँसता हुआ बोला, "बाओबाब के चित्र गोभी जैसे लगते हैं।"

"धत्!" अपनी समझ से मैंने बाओबाब के चित्र बहुत अच्छे बनाए थे।



"अरे! लोमड़ी... उसके कान... जैसे सींग हों... कितने बड़े हैं।" वह हँसता ही रहा।

"तू मेरे साथ नहीं रहा नन्हे-मुन्ने! मुझे खुले और बन्द साँपों के अलावा और कुछ बनाना ही नहीं आता था।

"ओह! कोई बात नहीं! बच्चे समझ लेंगे।" मैंने पेंसिल से एक 'जाबा' बनाया। उसको देते हुए डर ही लग रहा था। कि वह क्या कहेगा, "तेरी पता नहीं क्या-क्या योजनाएँ हैं...।"

मेरी बात से अलग जाकर उसने कहा, "जानते हो मुझे इस धरती पर आए कल एक साल हो जाएगा।"

थोड़ी देर वो चुप रहा। फिर बोला, "मैं बिलकुल यहीं कहीं उतरा था...।"

वह लाल हो गया।

न जाने क्यों एक बार फिर एक अजीब-सी पीड़ा महसूस की मैंने। उसी समय एक प्रश्न उठा, "अच्छा तो यह संयोग नहीं था कि आठ दिन पहले, जब हमारी मुलाकात हुई, तो तू बस्ती से दूर, बहुत दूर, इस वीराने में अकेले घूम रहा था। तू उसी स्थान की ओर लौट रहा था, जहाँ तू पहले उतरा था।"

नन्हे राजकुमार के मुँह पर फिर लाली दौड़ गई।

सकुचाते हुए मैंने फिर कहा, "उस दिन वर्षगाँठ के कारण ना?"

राजकुमार फिर शरमा गया। सवालों के जवाब नहीं देता था, "पर जब कोई शरमा जाए तो उसका मतलब 'हाँ' होता है। है ना?"

"आह! मुझे डर लग रहा है...।"

उसने उत्तर दिया, "तब मुझे एक काम करना चाहिए। अपने जहाज़ के पास वापिस जाना चाहिए। मैं यहाँ पर तेरा इन्तज़ार करूँगा। कल शाम को आना...।"

लेकिन मैं आश्वस्त नहीं हुआ। मुझे लोमड़ी की याद आई। किसी के निकट जाने का अर्थ होता है आँसुओं को निमंत्रण देना...!

उस कुएँ के पास ही एक पत्थर की दीवार का खँडहर था। दूसरे दिन शाम को जब मैं काम करके वहाँ लौटा तो नन्हा राजकुमार ऊँचाई पर पैर लटकाए बैठा हुआ था। मैंने सुना कि वह किसी से बातें कर रहा था।

"तुझे याद नहीं!" वह कह रहा था। "एकदम यहाँ नहीं..."

दूसरी आवाज़ ने उससे निश्चित ही कुछ कहा होगा, क्योंकि राजकुमार ने फिर ज़ोर देकर कहा, "तुम्हें याद नहीं! आज ही है वह दिन, हाँ वह जगह नहीं है..."

मैं दीवार की ओर बढ़ा। मैंने किसी को नहीं देखा वहाँ, कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ी। राजकुमार ने फिर से कहा, "...निश्चित ही। देखना मेरे उतरने के निशान बने हैं रेत में। मेरा इन्तज़ार करना। मैं रात में वहाँ पहुँच जाऊँगा।"

मैं दीवार से कुल बीस मीटर दूर था। फिर भी मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था।

एक चुप्पी के बाद राजकुमार ने फिर कहा, "तेरा ज़हर बहुत तेज़ है ना? मुझे बहुत देर तक तकलीफ तो नहीं होगी?"

मेरे दिल की धड़कन रुकती-सी लगी। मैं रुक गया, पर समझ में फिर कुछ नहीं आ रहा था।

"अब जा तू उसने कहा... मैं उतरना चाहता हूँ।"

मैंने दीवार के नीचे झुककर देखा और एक चीख निकल गई। यहीं राजकुमार की ओर मुखातिब था

वह— पीला साँप जिसका काटा आधे मिनट के अन्दर दम तोड़ देता है। हड़बड़ाहट में मैंने जेब से पिस्तौल निकाली और दौड़ने को हुआ, पर मेरी आवाज़ पर साँप वैसे ही नीचे सिकुड़ गया जैसे फव्वारा बन्द होने पर पानी की धार। फिर वो धीरे-धीरे एक खनखनाहट के साथ पत्थरों के बीच रेंग गया।

भागकर मैं दीवार तक पहुँचा और नन्हे-मुन्हे से राजकुमार को बाँहों में भर लिया। उसका चेहरा बर्फ जैसा हो रहा था।

"क्या हुआ? अब तू साँपों से बातें करता है?"

मैंने उसका सुनहरा मफलर ढीला किया। उसकी कनपटी पर पानी छिड़का और पानी पिलाया। मेरी हिम्मत नहीं हुई कि उससे कुछ पूछूँ। वह मुझे चुपचाप देखता रहा और मेरी गर्दन में बाँहें डाल दीं। गोली खाकर मरती हुई चिड़िया की धड़कन की तरह मुझे उसकी धड़कन सुनाई पड़ रही थी।

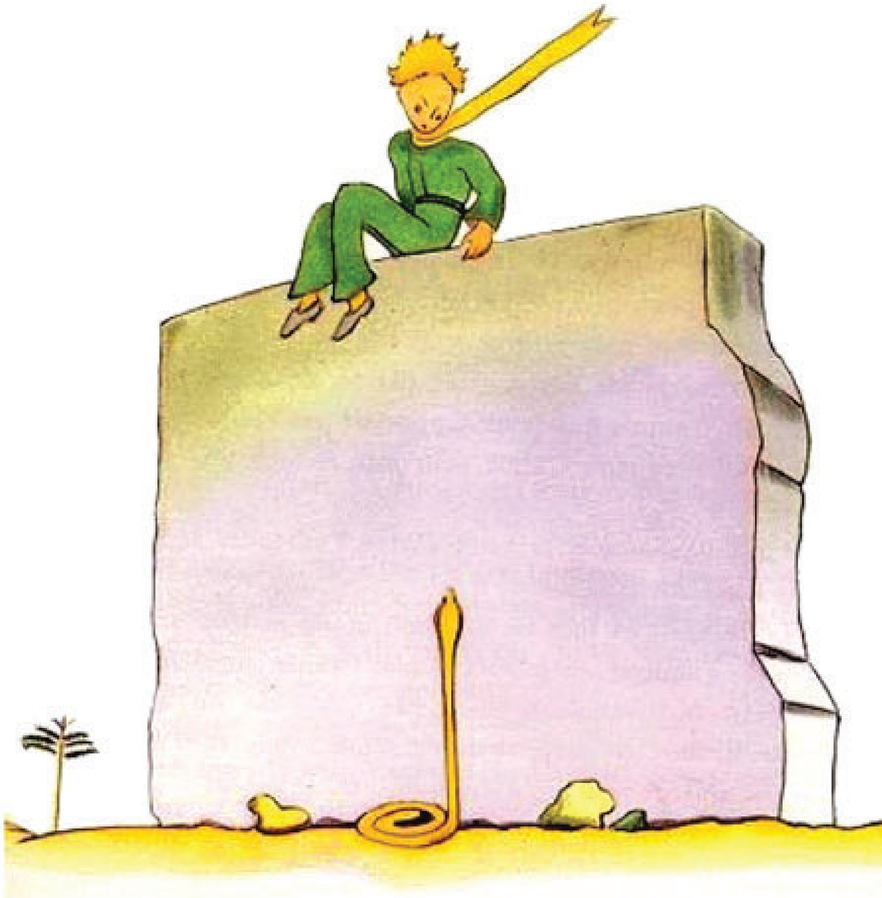
उसने मुझसे कहा, "मैं बड़ा खुश हूँ कि तेरा जहाज़ ठीक हो गया। अब तू घर लौट सकेगा..."

"कैसे मालूम तुझे?"

मैं तो उसे यही बताने आया था कि आशा नहीं थी पर मैं जहाज़ ठीक करने में सफल हो गया हूँ।

मेरे सवाल का जवाब दिए बिना वो अपनी ही बातें करने लगा, "मैं भी आज अपने घर जा रहा हूँ...।"

उदास होकर बुदबुदाया, "कितनी दूर है... कितना मुश्किल है...!"



मैंने महसूस किया कि कुछ असाधारण घट रहा है। मैंने उसे एक बच्चे की तरह बाँहों में कस लिया था। फिर भी लग रहा था कि वह किसी खाई की ओर बहकर मेरी पकड़ से बाहर जा रहा है और मैं असहाय हूँ...!

वह गम्भीर और कहीं दूर खोया-खोया सा लग रहा था, "मेरे पास तेरी दी हुई भेड़, उसको बन्द करने वाला बक्सा और 'जाबा' है...!"

विषादपूर्ण मुस्कान दिखाई पड़ी उसके चेहरे पर।

मैं इन्तज़ार करता रहा। लगा कि वह सहज हो रहा है धीरे-धीरे।

"नन्हे-मुन्ने तुझे डर लग रहा था..."

डर तो लगा था लेकिन वह धीरे-से हँसा, "आज शाम को और डर लगेगा।"

जैसे कुछ टूट गया हो अन्दर से। मेरी नसें ठण्डी पड़ने लगीं। मुझे लगा कि यह खयाल मैं बर्दाश्त नहीं कर पाऊँगा कि यह हँसी मैं आखिरी बार सुन रहा हूँ। वह

हँसी मेरे लिए रेगिस्तान में मिले पानी के सोते जैसी थी।

"नन्हे-मुन्ने! मैं तुझे फिर से हँसते हुए सुनना चाहता हूँ...!"

लेकिन उसने मुझसे कहा, "आज रात एक साल पूरा हो जाएगा। मेरा ग्रह उस जगह के ऊपर आ जाएगा जहाँ मैं उतरा था पिछले साल...!"

"नन्हे-मुन्ने! बोल यह एक बुरे सपने जैसा है कि नहीं? यह साँप, मिलने की बात, तेरा ग्रह...!"

मेरे सवाल का जवाब नहीं मिला। वह बोला, "खास बात दिखाई नहीं पड़ती।"

"यह तो है..."

"फूल की बात लो। अगर तुझे किसी फूल से प्यार है, जो किसी दूर के तारे पर खिला हो तो तुझे लगेगा जैसे सारे सितारे खिल उठे हों।"

"लगेगा तो...!"

"जैसे पानी की ही बात है। कल जो पानी तूने मुझे पीने को दिया वह घिरनी और रस्सी के कारण संगीत-सा लगा...याद है ना...बढ़िया था वह पानी।"

"था तो!"

"रातों को सितारों की ओर देखना। मेरा ग्रह इतना छोटा है कि यहाँ से दिखेगा भी नहीं। लेकिन यह अच्छा ही है। मेरा तारा इन्हीं तारों में से एक होगा और तुझे इन सबको देखना अच्छा लगेगा... ये सब तेरे दोस्त रहेंगे और फिर मैं तुझे एक उपहार भी दूँगा...!"

वह हँसने लगा।

"सच कितनी अच्छी लगती है तेरी हँसी मेरे नन्हे-मुन्ने!"

"यही तो है मेरा उपहार जैसे कि पानी...!"

"क्या मतलब?"

"हर कोई सितारों को अपनी तरह देखता है। किसी के लिए ये मार्गदर्शक का काम करते हैं। दूसरों के लिए टिमटिमाते दीपों के अतिरिक्त कुछ नहीं। वैज्ञानिकों के लिए ये समस्याएँ हैं। जिस व्यवसायी से मैं मिला था उसके लिए ये धन हैं। लेकिन ये सारे सितारे चुप रहते हैं। तेरे पास ऐसे सितारे होंगे जैसे किसी के नहीं।"

"क्या मतलब?"

"जब तू आसमान की ओर देखेगा रात को चूँकि मैं भी उनमें से एक सितारे पर होऊँगा, तुझे लगेगा कि सारे सितारे हँस रहे हैं। इस तरह सितारों को हँसना भी आएगा।"

और फिर वह हँसने लगा।

"और जब तुझे तसल्ली हो जाएगी (इन्सान किसी तरह खुद को तसल्ली दे ही लेता है) तो तुझे यह सोचकर अच्छा लगेगा कि तू मुझसे मिला था। तू हमेशा-हमेशा के लिए मेरा दोस्त बना रहेगा। तेरा मेरे साथ हँसने को जी चाहेगा और तू कभी-कभी ऐसे ही मज़े के लिए अपनी खिड़की खोल देगा। आसमान की ओर देखकर तुझे हँसते देखकर तेरे दोस्त चकित रह जाएँगे। तब उनसे कहना, "मुझे सितारों को देखकर हँसने का मन करता है। यह सुनकर वे तुझे पागल समझेंगे। अच्छा बेवकूफ बनाया मैंने तुझे!"

वह फिर हँसने लगा।

"जैसे मैंने तुझे सितारों की जगह छोटी-छोटी घण्टियाँ दे दी हों जिन्हें हँसना आता हो।"

वह फिर हँसा और गम्भीर हो गया, "यह रात... जानते हो... आना मत।"

"नहीं, मैं तुझे विदा करूँगा।"

"तुझे लगेगा कि मुझे कष्ट हो रहा है... ऐसा

लगेगा कि मेरी मृत्यु हो रही है। यह मत देखना। क्या ज़रूरत है..... मत देखना।"

"मैं तुझे जाने नहीं दूँगा।"

वह चिन्तित था।

"यह मैं इसलिए कह रहा हूँ... साँप की वजह से, ऐसा हो कि वह मुझे काटे ना – साँप होते ही दुष्ट हैं। महज़ खुशी के लिए काट सकते हैं...।"

"मैं तेरे पास नहीं जाऊँगा।"

वह अचानक थोड़ा आश्वस्त लगा। वह बोला, "लेकिन दूसरी बार काटने पर उसका असर ज़हरीला नहीं होता..।"

मैंने उस रात उसे रवाना होते नहीं देखा। चुपचाप वह कहीं चला गया था। जब मैं उसे ढूँढकर उस तक पहुँचा वह निर्णय ले चुका था और तेज़ कदमों से आगे बढ़ा जा रहा था। उसने इतना ही कहा, "अच्छा तू...?"

उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। अन्दर से परेशान था वह, "तूने ठीक नहीं किया," राजकुमार बोला, "तुझे दुख होगा। लगेगा कि मैं मर रहा हूँ पर वास्तविकता कुछ और होगी..."

मैं चुप था।

"समझ रहे हो ना! कितनी दूर जाना है। मैं इस भारी शरीर को वहाँ तक नहीं ले जा सकता।"

मैं कुछ बोल नहीं पा रहा था।

वह थोड़ा हतोत्साहित लगा, पर फिर हिम्मत करके उसने कहा, "कितना अच्छा लगेगा। मैं भी सितारों को निहारूँगा। सारे तारे घिरनी वाले कुँओं जैसे लगेंगे। सब मेरी अंजुली में पानी भरते से लगेंगे...।"

मैं चुप ही था।

"कितना मज़ा आएगा। तेरे पास होंगी करोड़ों घण्टियाँ और मेरे पास करोड़ों सोते...।"

आगे वह कुछ बोल न सका। उसकी आँखों से भी आँसू झरने लगे थे...।

कहने लगा, "मुझे अकेले जाने दो वहाँ।"

वह बैठ गया क्योंकि वह डरा हुआ लग रहा था।

पर फिर बोला, "जानते हो... मेरा फूल... मेरा कुछ दायित्व है उसके प्रति। इतना दुर्बल है वह, इतना मासूम।

उसके पास बेकार के चार काँटें हैं सारी दुनिया से जूझने के लिए...।"

मुझसे खड़ा नहीं रहा गया। मैं बैठ गया। वह बोला, "लो! बस...!"

थोड़ा रुका वह, फिर उठा, एक कदम आगे बढ़ा। मैं मूर्ति की तरह बैठा हुआ था। बस एक पीली-सी रोशनी हुई उसकी एड़ी के पास। क्षण भर को वह निस्पन्द और स्तब्ध रहा फिर वह एक कटे पेड़ की तरह गिर पड़ा। रेत की वजह से आवाज़ भी नहीं हुई।



छह साल बीत गए... मैंने कभी नहीं सुनाई यह कहानी। मेरे ज़िन्दा वापिस आने पर मेरे दोस्त खुश हुए थे! मैं उदास था लेकिन मैंने उनसे कहा, "कुछ नहीं बस थका हुआ हूँ...।"

अब कुछ सँभला हूँ पर पूरी तरह नहीं। मैं नहीं जानता हूँ कि वह अपने घर पहुँच गया। क्योंकि दूसरे दिन सुबह मैंने उसका शरीर वहाँ नहीं पाया था। उतना भारी नहीं था उसका शरीर... रात को मैं सितारों की आवाज़ सुनता हूँ मानों करोड़ों घण्टियाँ बज रही हों...।

लेकिन कुछ असाधारण घट गया कि मैंने जो 'जाबा' बनाया था उसकी भेड़ के लिए उनमें मैं चमड़े की पट्टी लगाना भूल गया था। सोचता हूँ – क्या हो रहा होगा वहाँ। कहीं भेड़ ने उसका फूल चर न लिया हो...।

कभी-कभी सोचता हूँ ऐसा नहीं हो सकता। राजकुमार रात को अपने फूल को शीशे के ढँकने से ढँक देता होगा और भेड़ पर ख्याल रखता होगा। ...तब थोड़ी खुशी होती है और सितारों का मृदहास सुनाई पड़ता है। फिर सोचता हूँ, "कभी-कभी इन्सान भूल जाता है और एक भूल काफी है। एक रात वह फूल को ढँकना भूल गया होगा या भेड़ ही चुपचाप बक्से-से निकल पड़ी होगी...। और फिर तारों की घण्टियाँ आँसुओं में बदल जाती हैं।" कितना अद्भुत है यह रहस्य मेरे लिए, और आपके लिए भी जो मेरी ही तरह नन्हे राजकुमार से प्यार करने लगे हैं। हमारे लिए यह जानने से बढ़कर कुछ भी नहीं है कि एक भेड़ जिसे हम जानते भी नहीं, कहीं एक निराले से गुलाब को चर गई या वह अभी खिला हुआ हमारे नन्हे-मुन्ने का जीवन सँवारे हुए है।

आसमान की ओर देखिए और पूछिए कि भेड़ उस गुलाब को चर गई कि नहीं! और देखिएगा कैसे सब कुछ बदल जाएगा।

और... और बड़े-बूढ़े नहीं समझेंगे कि ऐसी बातों का कोई महत्त्व भी होता है।

यह मेरे संसार का सुन्दरतम और सबसे विषादपूर्ण दृश्य है। यह वही दृश्य है जो पहले भी देखा। पर मैंने एक बार और इसलिए बनाया है कि आपको ठीक-से दिखा सकूँ। यहीं जन्मा था मेरा नन्हा राजकुमार इस धरती पर और फिर यहीं से विलीन हो गया।

इसे ठीक-से देख लें ताकि यदि आप अफ्रीका भ्रमण पर निकले हों और रेगिस्तान में ऐसा ही कुछ दिखाई पड़े तो आप उसे फौरन पहचान लेंगे। यदि आपको उधर से गुजरने का अवसर मिले तो मैं आपसे हाथ जोड़कर विनती करता हूँ वहाँ से यूँ ही मत जाइएगा। एक क्षण को तारे के नीचे इन्तज़ार करिएगा। अगर कोई हँसता हुआ बच्चा आप तक आए, उसके बाल सुनहरे हों और यदि वह आपके प्रश्नों के उत्तर न दे तो आप समझ लीजिएगा कि वह कौन है और फिर मेहरबानी करके, मेरी उदासी का ख्याल करके, मुझे फौरन लिखिएगा कि 'वह' लौट आया है।





चित्र: दीनू मुचाकी, पाँचवीं, शासकीय आवासीय पोटा केबिन पाकेला, सुकमा, छत्तीसगढ़

बीड़ी बनाने का काम

अभिषेक प्रजापति
चौथी
शासकीय प्राथमिक शाला
कल्याणपुर, सागर, मध्य प्रदेश

मेरे घर में बीड़ी बनाने का काम होता है। मेरी दादी बीड़ी बनाती हैं। बीड़ी बनाने के लिए गर्मियों में तेंदूपत्ते को तोड़ा जाता है। फिर उनकी गड्डी बनाकर सुखाते हैं। फिर उन्हें पानी में फुलाते हैं। फिर उन्हें काटते हैं। और फिर उनकी बीड़ी बनाते हैं। फिर 15-16 बीड़ी की कट्टियाँ बनाते हैं। फिर उन्हें सुखाते हैं। फिर इन्हें गिनकर सट्टेदार को देते हैं। वो हमें इसके पैसे देता है। मैं सोचता हूँ कि बीड़ी तेंदूपत्तों से ही क्यों बनाते हैं और तेंदू की सूखी पत्तियों की गड्डियों को पानी में क्यों डाला जाता है?



महुआ बीनना

सोमरू सोड़ी
दसवीं
कोडरीकोसुम, सुकमा, छत्तीसगढ़

जब महुआ गिरना शुरू होता है तब रात को आठ बजे हम सभी घर वाले महुआ तरफ गाय भगाने जाते हैं। जितनी भी गाएँ घूमती रहती हैं उनको वहाँ से भगाते हैं। एक-दो बजे तक हम महुआ पेड़ के नीचे सोते हैं और फिर उठकर चाँद की रौशनी में महुआ बीनना स्टार्ट करते हैं। सुबह बासी वाला खाना खाकर फिर महुआ बीनने भिड़ जाते हैं। तेंदू खाने का टाइम भी नहीं मिलता है। दिन भर थोड़ा भी आराम नहीं कर पाते। कुछ ठगरू लोग हगने जाते हैं और उधर ही दस घण्टे बैठे रहते हैं।

धूप में महुआ बीन-बीनकर बहुत कमज़ोर हो जाते हैं और कोई-कोई तो बीमार भी होते हैं। जिस तरह धूप में पत्ते सूखते हैं उसी तरह सूरज मुझे भी सुखाने की कोशिश करता है। लेकिन सुखा नहीं पाता। पर आदिवासी महुआ छोड़ते नहीं! जिस दिन बहुत महुआ गिरता है उस दिन हम दातुन तक नहीं कर पाते। शाम को महुआ बीनना खतम करके दातुन करते हैं और फिर खाना खाते हैं। बीनने में बहुत दिक्कत होती है क्योंकि सर, पीठ और घुटने दर्द करते हैं। इस तरह तीन-चार हफ्तों तक बीनते हैं और उसके बाद पूरा महुआ इकट्ठा कर दो-तीन दिन धूप में सुखाते हैं। महुआ सूख जाने पर ड्रम में खूनते हैं।

कुछ लोग महुआ बाज़ार में बेचने ले जाते हैं। त्यौहार में महुआ का दारू बनाकर पीते और बेचते भी हैं। दारू बनाकर बेचने से बहुत फायदा होता है। मारवाड़ी-ठाकुरों के पास बेचने से बहुत कम पैसा मिलता है। एक बॉटल दारू 50 रुपए में बेचते हैं और किलो में बेचने से 25 या 30 रुपए मिलते हैं। इसलिए आदिवासी बहुत कम महुआ बेचते हैं।

मेरा पन्ना



चित्र: नादिर, मुस्कान संस्था, भोपाल, मध्य प्रदेश

अगर मैं दुनिया बनाती...

एंजेल घंघास
सातवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल
गुरुग्राम, हरयाणा

मेरी दुनिया सबसे अलग होती। सबसे पहले तो मैं हर दो किलोमीटर में जानवरों के लिए जंगल बनाती ताकि वो हमेशा खुश रहें। और ताकि कहीं पे भी किसी जानवर की कमी न हो। ये सब इसलिए क्योंकि जानवर मेरे सबसे करीबी दोस्त हैं। हमने उनके सारे घर छीन लिए तो वो उसमें क्या कर सकते हैं।

फिर मैं लिंग भेदभाव कभी नहीं रहने देती। मैं सबको शुरू से ही लड़कियों और महिलाओं की इज़्ज़त करना सिखाती। और मेरी दुनिया में लड़कियाँ सारे काम करतीं जैसे कि पुलिस, डॉक्टर आदि। आप सोच रहे होगे कि महिलाएँ तो ये सारे काम करती हैं, फिर ये सब क्यूँ। ये इसलिए क्योंकि आज भी लड़कियों को लड़ना पड़ता है अपने हक के लिए।

मैं ऐसा नियम बनाती जिसमें एक हफ्ते में सिर्फ तीन दिन ही गाड़ियाँ चलतीं ताकि प्रदूषण कम हो और लोगों को साँस लेने में कोई दिक्कत न आए। और अगर किसी को ज़रूरी काम हो तो उनको एक लैटर भिजवाना होगा जिसमे उनके जाने का कारण होगा। हर गाँव और शहर में कम से कम एक हॉस्पिटल तो होगा ही। क्योंकि आज की दुनिया में गाँव के लोगों को इलाज के लिए कितनी दूर जाना पड़ता हैं।

मेरी दुनिया में सब एक बराबर होंगे। सबको बराबर का सम्मान और इज़्ज़त मिलेगी और सारी खुशियाँ भी। क्या आप ऐसी दुनिया चाहेंगे?



चित्र: किरण कुमारी, चौथी, नरेन्द्रपुर, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

बेंगलुरु से एक दोस्त को चिट्ठी

ईशान चटर्जी
नौवीं, प्रमीथियस स्कूल, नोएडा, उत्तर प्रदेश

प्रिय राहुल,

मैं यहाँ ठीक हूँ। उम्मीद करता हूँ कि तुम भी ठीक होगे। बेंगलुरु आए हुए मुझे दो साल बीत चुके हैं। यह जगह मुझे बहुत पसन्द है। लेकिन कभी-कभी कोलकाता की दुर्गा पूजा के लिए मेरा मन बहुत दुखता है। वह चमक और रौशनी से भरी हुई गलियाँ, वह खुशबूदार मीठा पुलाव जो हर घर और दुकान में बनाया जाता है, वह जोश जिससे यह त्योहार मनाया जाता है, वह यहाँ कहीं नहीं मिलता।

मन करता है कि मैं दुर्गा पूजा के समय कोलकाता आ जाऊँ, पर हर बार मेरे स्कूल में ठीक उसी समय परीक्षाएँ चलती रहती हैं। मेरा मन हर बार दुखता है कि न मैं तुम्हें मिल पा रहा हूँ और न ही मैं यह त्योहार मना पा रहा हूँ। याद है जब हम एक साथ उस गली वाले पार्क में खेलते थे, तो हर तरफ लोग गाना बजाते-बजाते नाचते थे। और फिर हम उन्हें देखते हुए झूला झूलते थे। समय कितनी जल्दी बीत जाता है। है ना?

चाचा और चाची को मेरा प्रणाम कहना। उम्मीद करता हूँ कि हम इस साल मिल सकेंगे।

तुम्हारा

ईशान



चित्र: काजल कुमारी, यू के जी, नरेन्द्रपुर, परिवर्तन सेंटर, सिवान, बिहार

पापा की हिम्मत

आएशा
सीख समूह
स्वतंत्र तालीम, रमद्वारी सेंटर
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

2019 के पहले हमारा परिवार खुशी-खुशी रहता था। मगर 2019 में हमारे पापा की गर्दन में कैंसर हो गया। और उसका इलाज करवाने के लिए हमारे पापा को लखनऊ जाना पड़ा। तब हमारा परिवार दिक्कतों से घिर गया। हमारे पापा को ठीक होने में दो साल लग गए। 2021 में हमारे पापा एकदम ठीक हो गए। ठीक होते ही पापा काम करने लगे। उन्होंने अपनी पूरी जान काम में लगा दी। अपने मन और शरीर दोनों को सँभाला। और तब हमारे परिवार में फिर से खुशहाली आ गई। पापा की हिम्मत में एक बहुत बड़ी क्रान्ति छुपी थी, ऐसा मुझे अब एहसास होता है।

मेरा पन्ना

1. चित्रों की मदद से खाने की इन चीज़ों का नाम पता करो:


1


2


3


4

2. तुम निम्मी, डेविड, रोहन और नरगिस के साथ एक पार्क में हो। उन चारों में से कोई एक फोटोग्राफर, एक चित्रकार, एक लेखक और एक डॉक्टर है। लेकिन तुम्हें ये नहीं पता कि कौन, कौन है। पर तुम्हें उनके बारे में ये बातें पता हैं:

- निम्मी न ही फोटोग्राफर है, न ही डॉक्टर।
- तुम्हें डेविड के बारे में कुछ भी नहीं पता।
- तुम्हें पता है कि रोहन डॉक्टर नहीं है।
- नरगिस न तो फोटोग्राफर है, न डॉक्टर और न ही चित्रकार।

क्या इन बातों के आधार पर तुम बता सकते हो कि कौन, कौन है?

3. खाली डब्बों से गायब हुए अंकों को भरो।

	+		−		6
+	■	+	■	+	
2	x		+		24
−	■	−	■	−	
	+			1	10
1		10		10	

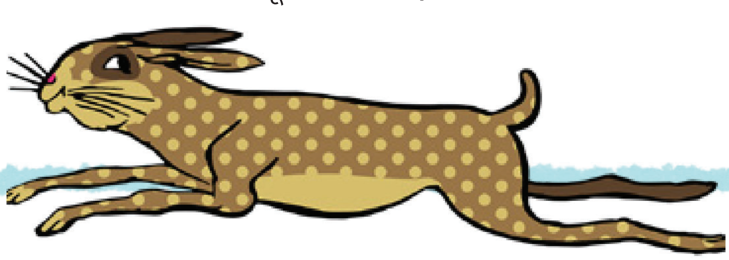
पर ध्यान रखना कि:

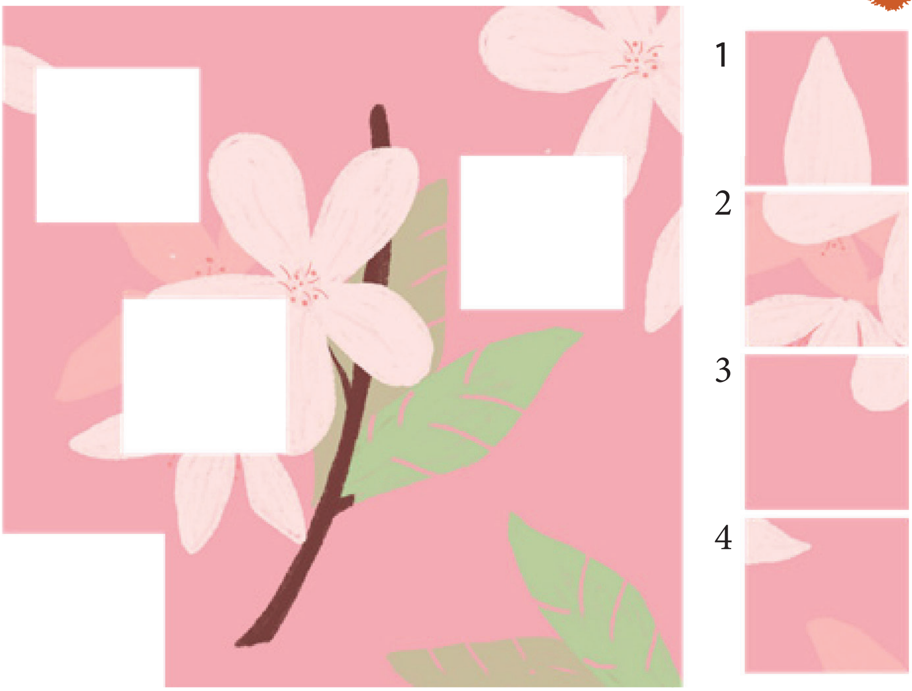
- अंक 1 से 9 के बीच के होने चाहिए।
- एक अंक सिर्फ एक ही बार आएगा।
- हर एक पंक्ति और कॉलम में गणितीय समीकरण है।
- हर पंक्ति और कॉलम में गुणा और भाग पहले करना है फिर जोड़ और घटाना।

4. इस ग्रिड में कुछ पेड़ों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने नाम ढूँढे?

ना	ग	फ	नी	बा	आ	ना	अं	गु
ल	रि	मी	ठी	नी	म	बे	जी	ल
नी	ल	य	ची	ता	अ	हु	र	मो
तें	ब	बू	ल	ड़	बा	ख	आ	ह
दु	के	र	पी	दू	ओ	जू	रो	र
प	ला	श	ग	से	बा	र	ना	ट
त्ता	अ	म	रू	द	ब	सा	ल	चं
जा	शो	दे	व	दा	र	म	गौ	द
मु	क	ट	ह	ल	स	ह	ज	न

5. एक खरगोश जंगल में कितनी दूर तक दौड़ सकता है?





6.

इस पेंटिंग के कुछ टुकड़े अलग हो गए हैं। क्या तुम बता सकते हो कि कौन-सा टुकड़ा कहाँ फिट होगा?

7. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग आइसक्रीम होनी चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी आइसक्रीम होंगी?



फटाफट बताओ

एक आदमी ने एक उँगली से 6 सैकंड में 6 लोगों को ऊपर पहुँचा दिया। ऐसा कैसे हो सकता है?

(।ाछ र्नकिल्फि फिड़ाह कि)

क्या है जो बारिश के नीचे आने पर ऊपर चला जाता है?

(ाताछ)

मैं इतना मज़बूत हूँ कि जहाज़ को भी तोड़ सकता हूँ। लेकिन मुझे सूरज से डर लगता है। मैं क्या हूँ?

(र्फब)

मैं चिड़िया का वो हिस्सा हूँ जो आसमान में नहीं। मैं समुद्र तैर सकती हूँ पर भीगती नहीं। मैं कौन हूँ?

(ईाछरप)

चित्र पहेली

बाएँ से दाएँ

ऊपर से नीचे



सुडोकू 54

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

	2	8				4	9	7
			4		7		1	
7			2	1			5	8
	9		1	7				5
4			8			9		2
	7	3	9			8	6	1
			5					
	4	7	6		3	1		9
3			7	4		5	2	



माथापच्ची
जवाब

1. 1. गुलाबजामुन 2. सेंडविच 3. कढ़ाई पनीर 4. कलाकन्द

2. नरगिस न तो चित्रकार है, न फोटोग्राफर और न ही डॉक्टर। तो ज़ाहिर है वो लेखक है। इसी हिसाब से निम्मी चित्रकार, रोहन फोटोग्राफर और डेविड डॉक्टर है।

3.

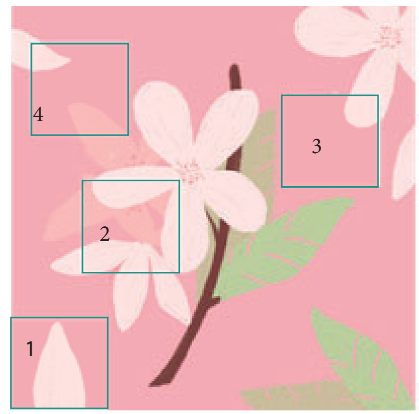
3	+	8	–	5	6
+		+		+	
2	x	9	+	6	24
–		–		–	
4	+	7	–	1	10
1		10		10	

4.

ना	ग	फ	नी	बा	आ	ना	अं	गु
ल	रि	मी	ठी	नी	म	बे	जी	ल
नी	ल	य	ची	ता	अ	हु	र	मो
तें	ब	बू	ल	ड़	बा	ख	आ	ह
दु	के	र	पी	दु	ओ	जू	रो	र
प	ला	श	ग	से	बा	र	ना	ट
त्ता	अ	म	रू	द	ब	सा	ल	चं
जा	शो	दे	व	दा	र	म	गाँ	द
मु	क	ट	ह	ल	स	ह	ज	न

5. आधी दूर तक क्योंकि आधी दूरी के बाद तो वो जंगल से बाहर निकल रहा होगा।

6.



7.



मई की चित्रपहेली का जवाब

	1 कु	2 ऑ			3 कं	4 चा		5 चा
		6 ग	म	7 छा		8 क	9 च	रा
10 जा	11 मु	न		12 ता	13 र		टा	
	र		14 डं		15 ज	म्हा	ई	
16 लुं	गी		17 ब	र	नी			18 चा
		19 बे	ल		20 ग	द्दे	दा	र
21 च	प्प	ल			न्धा			दी
र		चा		22 कु		23 जे		वा
24 खी	रा		25 ज	र्सी		26 ब	क	री

सुडोकू-53 का जवाब

8	4	6	2	3	7	9	1	5
7	9	1	5	4	8	2	6	3
5	2	3	6	1	9	4	7	8
4	6	7	9	2	5	8	3	1
2	3	8	1	6	4	5	9	7
9	1	5	8	7	3	6	2	4
1	8	9	3	5	2	7	4	6
3	7	2	4	8	6	1	5	9
6	5	4	7	9	1	3	8	2

तुम भी जानो

भारत का बदलता नक्शा



सन 1947 में वर्तमान भारत बना। लेकिन उसके बाद भी भारत की सीमाएँ बदलती रही हैं – अन्तर्राष्ट्रीय और अन्दरूनी दोनों ही। 1947 में भारत के ज़्यादातर प्रदेशों को अँग्रेज़ों से आज़ादी मिली। लेकिन 1949 तक ही कश्मीर, हैदराबाद, जूनागढ़, मणिपुर और त्रिपुरा भारत का हिस्सा बने। फिर 1956 तक प्रदेशों में ज़िलों के जोड़-घटाव होते रहे, उनके नाम बदले। और ये सिलसिला कुछ हद तक आज भी जारी है। हाल ही में ऐसा 2019 में हुआ, जब जम्मू-कश्मीर और लद्दाख दो अलग केन्द्र शासित प्रदेश बने। अगर तुम 1950 के नक्शे पर नज़र डालो तो शायद कई प्रदेशों को पहचान भी नहीं पाओगे। तो पता करो कि तुम्हारा प्रदेश कब बना और उसमें क्या बदलाव होते आ रहे हैं...



मिल्की वे के ब्लैक होल का पहला चित्र

पेज 24 पर तुमने हमारी आकाशगंगा 'मिल्की वे' के बीच में ब्लैक होल के बारे में पढ़ा होगा। मई 2022 में इसका पहला चित्र इवेंट होराइज़न टेलीस्कोप नामक एक अन्तर्राष्ट्रीय समूह ने लिया। हमारे इस ब्लैक होल का नाम है सैजीटेरियस ए*। ये सूरज से कुछ 40 करोड़ गुना ज़्यादा भारी है। ब्लैक होल का गुरुत्वाकर्षण बल इतना होता है कि वो आसपास की सारी चीज़ों के साथ रौशनी को भी अपने अन्दर खींच लेते हैं (इसीलिए काले दिखते हैं!)। लेकिन चिन्ता मत करना, ये पृथ्वी से इतनी दूर है कि पृथ्वी को इससे कोई खतरा नहीं है।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

बादलों की दहाड़ से
भागी हवा पहाड़ से
पेड़ वहाँ सब हिल गए
घुटने हवा के छिल गए



हवा

श्रवण कुमार सेठ

चित्र: सुरगी के वी
पाँच साल, स्टूडियो रनिंग स्टिच
बेंगलूरू, कर्नाटका

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026 से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन